राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 9 अंक : 105 15 जनवरी 2006

सदस्यता शुल्क : वार्षिक : रुपए 40/–
भारत व नेपाल में एक प्रति: रुपए 5/–

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व विशेष सूचना	40
3.	स्त्रि (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	41
4.	अनमोल वचन व ज्ञान सार	42
5.	सत्संग भावांश	43
6.	सतगुरु कृपा	45
7.	कर्म का फल (कहानी)	47

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइट:- www.radhaswamidinod.org
इ-मेल:- info@radhaswamidinod.org

भिवानी	:	कैसेट क्रमांक : 116
दिनांक	:	7 अगस्त, 1993
समय	:	रात्रि

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों ! इसे मेरा अहंकार न समझना। मेरे दिल की, मेरी आत्मा की सच्ची बात समझ लेना कि मेरे ऊपर सतगुरु की अपार दया है।

मुझे तो एक भरोसा मेरे सतगुरु का रहा है। अगर मेरा सतगुरु नहीं होता तो मैं गिर जाता। उनकी बड़ी अपार दया थी। पर मैंने दादरी के सत्संग में एक बात कही थी कि सतगुरु दयाल कैसे होता है। सतगुरु जैसा दयाल तो कोई भी नहीं होता है। उन्होंने क्या दया की? उन्होंने बड़ी भारी दया की। ये सत्संग इसी तरह फैलते हैं। पर मैं तो दया की बातें बता रहा हूं। मैंने कहा कि मेरा अहंकार न समझना इस बात में। मैं सच्ची बातें कहता हूं। आप संगत को मेरी बातों का यकीन करना चाहिए। अगर आप मेरी बातों को नहीं मानोगे तो गिर भी जाओगे। आपने कौन सी बात माननी है? जब मेरे अंदर नशे–विषयों की बात आ जाए और वह तुम्हें दिखाई दे जाए तो मेरा मुंह न देखना। इसे घमण्ड नहीं समझना। यह मेरे गुरु की दया थी। बल्कि यह तो मालिक की दया है। सच्चाई तो सच्चाई ही होती है। मैं तो शराबी के घर का अनाज खाकर भी नाराज होता हूं। यह मेरे गुरु का कहना है कि शराबी के घर का अन्न खाने से तो गौ जैसा पाप लगता है। मेरे ऊपर ऐसी कोई आफत भी नहीं आई है। 70 वर्ष की उम्र हो गई।

मालिक की दया है। मेरे गुरु जी ६० साल की उम्र में गए। उन्होंने कभी भी डॉक्टर की दवाई नहीं ली। वे कभी भी अस्पताल नहीं गए। ६० वर्ष की उम्र में पैदल चल दिया करते थे। बल्कि मैं एक बार चला गया महाराज फकीर चन्द के पास। फकीर चन्द महाराज सत्संग कर रहे थे। उन्होंने कहा–बेटा ! मैं गौड़ ब्राह्मण हूं और मैं आपके आगे सच्ची बातें कहता हूं। अगर मैं बीमार होकर मरूं तो मेरे फोटो पर पेशाब करना। मैंने कहा–ये बातें क्यों कहीं? उन्होंने कहा–मैं बीमार नहीं होऊंगा। क्योंकि मैंने आज तक धोखा नहीं दिया। संत अगर खुद ही अपनी ही संभाल नहीं करता है तो कैसा संत है? खुद को अपनी संभाल करनी चाहिए। जो दुखी होकर मरता है और खुद अपनी ही सम्भाल नहीं कर सकता तो वह दूसरों की क्या करेगा? दुखी होकर मरने वाला तो कुछ भी नहीं होता है। मेरी अपनी चार पीढ़ी का तो मुझे पता है। स्वामी जी महाराज बड़ी शांति से गए। पहले बता कर गए। हजूर महाराज जी ने पहले ही बता दिया था और शिवव्रतलाल जी ने छः महीने पहले बता दिया था कि मैं इतने दिन में जाऊंगा और जब चोला छोड़ने का टाइम आया उस वक्त दूध मंगवाया सवा पांच मन। प्रताप को पता है क्योंकि यह मेरे से कुछ बड़ा भी है। यह तो उनकी गोद में खेला हुआ है। इसके बाद उन्होंने दूध में स्नान करके समाधि लगा कर चोला छोड़ दिया। मेरे गुरु महाराज भी ऐसे ही थे। स्नान करके समाधि लगा कर चोला छोड़ दिया। मेरे गुरु महाराज ने तीन दिन पहले बता दिया था कि फलां दिन जाऊंगा और शांति से चले गए। मैंने जब अपने महाराज जी के बारे में बातें बताई तो फकीरचन्द जी ने कहा–बेटा यह संतों की निशानी होती है। जब हम अपना ही दुख दूर नहीं कर सकते तो फिर हम दूसरों का क्या करेंगे? उन संतों की बड़ी बेधड़क बातें थीं। मैं भी यहीं बाते कहता हूं। मेरे पास संगत बहुत आती है। मैं

उनकी गिनती तो कैसे करूं? आठ नौ रजिस्टर देखने में ही नहीं आ सकते हैं। आज सत्संगियों का हिसाब लगाया था। पर मैं तो पढ़ा लिखा भी नहीं हूं। न मैं कोई बड़ा सेठ साहूकार ही हूं। पर मेरे ऊपर मालिक की दया और सतगुरु का हाथ है। मेरे सत्संगी ऐसे हैं अगर मैं कर दूं कि एक लाख रुपया पानी में डाल दो तो वे एक लाख को आग लगा कर पानी में डाल दें। मेरी संगत इतनी तगड़ी है। इनका इतना विश्वास है। अब इनको अपने विश्वास का फल नहीं मिला तो सतगुरु क्या दया करेगा? अब दो बार में, यहां पर और दादरी वाले सत्संग में पांच–छः हजार आदमियों ने नाम ले लिया होगा। मेरे सतगुरु ने कहा था कि संगत तुम्हारी इतनी आएगी कि ठिकाना ही नहीं है। मैंने कहा कि क्या पता? वे बोले कि बिना पैसे के ही प्रचार हो जाएगा। क्या अब भी पता नहीं है? पर प्रेमियो ! मैं आप लोगों को बातें कह रहा था वे अधूरी ही छोड़ गया। मैं कह रहा था कि जिन पर सतगुरु हुए दयाल, वा घर काहे की कमी। मैं देहधारी सतगुरु की भी बड़ाई करता हूं। जब देहधारी भी खुश हो जाते हैं तो वे दयाल नहीं होते हैं। दयाल तो एक और ही होता है। इस बात को अगर तुम समझ गए तो फिर तुम संसार में बार–बार नहीं आओगे। इस बात को समझ लो। दयाल को भी समझ गए तो तुम कभी दुख भी नहीं पाओगे। कबीर साहब कहते हैं कि सतगुरु हुए दयाल। मैं सतगुरु की बातें कहता हूं। दयाल कौन होता है? आप लोगों में से किसी का कुर्ता फट गया है, किसी ने आपको कुर्ता दे दिया तो वह भी दयाल ही है। जिसने तुम्हें बैल दिला दिए तो वह भी दयाल है। जिसने जमीन दिला दी है वह भी दयाल है। कर्जा था वह उतरवा दिया तो वह भी दयाल है। विद्या सिखा दी वह भी दयाल है। ज्यादा क्या कहूं किसी अंधे को आंखें दे दी तो वह भी दयाल है। पर ये कच्चे दयाल हैं। ये पूरे दयाल नहीं हैं। फिर आप लोगों को एक मिसाल देकर बताऊंगा।

महाराज जी बताया करते थे कि एक जेल में बहुत ज्यादा कैदी पड़े थे। एक दयाल चला गया। उसने जाकर कहा कि ये बेचारे जेल में बहुत दुखी हैं। क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा कि इन सबको मीठा पानी पिलाओ। शर्बत घोल लो। गर्मी बहुत है। वह दयाल था तो उसने बड़ी दया की। पर रहे तो जेल में ही। दूसरा दयाल आता है। मैं सतगुरु की बातें बताता हूं। गुरुओं की नहीं कहता हूं। गुरु तो अपना गुजारा करने के लिए आते हैं। सतगुरु जीवों को लेने के लिए आते हैं। अब यह भी किसी के दिल में खटका लगा होगा कि सतगुरु कौन होता है और गुरु कौन होता है। यही तो आपने समझना है। एक भेषी होता है। एक होता है टेकी। एक होता है साधु। एक होता है हंस और एक परमहंस। एक संत और एक परम संत होता है। मैंने ये बातें काफी बार बताई हैं। पर तुमने किसी भी सत्संग में नहीं सुनी हैं। इन बातों को तजुर्बे और असलियत से बताता हूं। हंस परम हंस की गति पर चला जाता है। वह फिर डिगता नहीं है। उसके नीचे वाले तो डिग जाते हैं। संत नहीं डिगता। परमसंत तो कुल मालिक ही होता है।

सो मैं बता रहा था कि उस दयाल ने मीठा पानी तो पिला दिया पर रहे तो वे जेल में ही। फिर दूसरा दयाल आया। उसने क्या किया? सर्दी से बच जाएंगे। उसने उनको कम्बल दे दिए। सो दया तो वह भी कर गया। पर रहे वे अब भी जेलखाने में ही। तीसरा और दयाल आता है। वह सोचता है कौन इनको हलवा पूरी देता है। उसने हलुवा, पूरी, खीर, पूड़े बना कर वहां भोजन करवा दिया। पर रहे तो वे जेल में ही। अब दयाल तो तीन आ चुके। अब मैं असली दयाल की बातें बताता हूं। अब चौथा दयाल आया। उसके हाथ में जेल खाने की चाबी थी। उसने ताला खोल कर सारे ही आजाद कर दिए। अब इनमें कौन सा दयाल बड़ा हुआ? चौथा दयाल बड़ा हुआ।

सो इस संसार में बहुत दयाल आते हैं। मैं तो सतगुरु दयाल की बातें कहता हूं। सतगुरु किसको कहते हैं?

गुरु–गुरु में भेद है और गुरु-गुरु में भाव।
सो ही सतगुरु बंदिए जो शब्द बतावे दाव।।

उसी सतगुरु के पल्ले बंधना जो शब्द का भेद बताता है। वही सतगुरु माना जाता है। शब्द बिना तो सारा ही देश अंधा बैठा है। शब्द की कमाई के बिना तो आदमी का चोला भी नहीं मिलता है। शब्द इतनी ऊंची चीज है। अब सभी दयालों की बातें बता दीं। बल्कि जिसने आदमी का चोला दिया है वह भी दयाल है। पर वह दयाल नहीं है। उसने तो भेज दिए बस। सहजोबाई ने कितनी बेध ाड़क वाणी कही है।

हरि ने पांच चोर दिए साथा।
सतगुरु ने छुटाली, समझ अनाथा।।

सो क्या वह परमात्मा दयाल हुआ? अगर उसको दयाल कहते हो तो उसे निर्दयी भी कहना पड़ेगा। आप पूछोगे यह किस तरह? एक आदमी तो खूब संतुष्ट होकर खाता है और एक भूखा बैठा रहता है। दो चीजों में एक को मानना पड़ेगा। या तो कर्म को मानना पड़ेगा या उस कर्ता को निर्दयी मानना पड़ेगा। एक बात को माननी पड़ेगी। अगर कर्म तो मानोगे तो ठीक है। वह निर्दयी नहीं है। जैसा जिसका कर्म होता है वह भुगता देता है। तुम्हारे शास्त्र भी यही कहते हैं–

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जाप करहिं तस फल चाखा।।

यदि मुझसे कोई बात कुछ कम ज्यादा कही जाए तो मजाक न करना। क्योंकि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं। पर मैं उस बात की तसल्ली करा दूंगा। सो मैं दयाल की बातें कहता हूं। परमात्मा ने तो चोला देकर भेज दिए। क्या उसने दया की है? नहीं। उसने

कोई दया नहीं की। उस दया का तो सहजोबाई ने खण्डन कर दिया, इस बात से–

हरि ने पांच चोर दिए साथा।
सतगुरु ने छुटा लेई समझ अनाथा।।
हरि ने आपा छुपाया।
सतगुरु ने दे दीपक दर्शाया।
हरि को तजूं, पर गुरु न विसारूं।
गुरु समान मैं हरि को नहीं निहारूं।।
हरि रूठे तो रूठण दे, तू भी दे सटकाय।
सतगुरु सिर पे राखिये, आप ही करें सहाय।।

वे अपने आप ही सहायता कर देते हैं। यह सहजोबाई की वाणी है। सो दयाल कौन हुआ? जिसने बेटे पोते दे दिए वह है क्या? नहीं। यह कोई बात नहीं। क्या वह ज्यादा बड़ा दयाल है? राज दिलाने वाला भी दयाल नहीं है। कितने ही मंत्री अकाल मत्यु मारे जाते हैं। फिर दयाल कैसे हुआ? दयाल तो मरने नहीं देता है। दयाल तो अपने घर में ले जाता है। दयाल उसी का नाम है जो कभी उसको दुखी नहीं होने देता है।

सतगुरु हुए दयाल, वा घर काहे की कमी।

उस के यहां किसी चीज की कमी रहती ही नही है। जितनी भी दुनिया की कमियां हैं सभी पूरी नहीं कर सकते हो। न्यारी–न्यारी कमियां तुम्हारी पूरी हो जाएंगी, मनवांछित फल मिल जाएंगे। फिर भी और कमी रह जाएगी। जब वह सतगुरु दयाल हो जाता है तो वह सभी कमियों को पूरा कर देता है। कहते हैं–

एक साधे सब सधैं सब साधे सब जाहिं।
कहे कबीर सोच समझ मन माहिं।।

एक को साधने से सभी कुछ सिद्ध हो जाता है। फिर वह सतगुरु दयाल क्या बताता है? न वह बेटे और धी जंवाई देता है।

न वह धन जायदाद देता है। वह तो यही कहता है कि जहां से आए हो वहीं जाने की कोशिश करो। वह तो यही कहता है, जिस समुद्र से यह कतरा आया है, वहीं जा कर समाने की कोशिश करो। अब आप पूछोगे कि यह बात कौन सा गुरु कहेगा? सो यह तो देहधारी गुरु ही कहेगा। पर उस देहधारी से आपको वह शब्द स्वरूपी मिल जाएगा। जब देहधारी पर विश्वास नहीं है या देहधारी शब्द भेदी नहीं है तो वह शब्द से कभी नहीं मिलाएगा। यही तो बात है। सारा देश ही उपदेश करता है (नाम देता है) जगह–जगह गुरुओं के तबले बजते हैं। जगह–जगह गुरुओं के जलूस निकलते हैं। जगह–जगह गुरु सत्संग करते हैं। फिर भी दुनिया पागल हुई फिरती है। फिर भी बेईमानी चालाकी और हेराफेरी को कोई नहीं छोड़ता है। किसी भी एम.एल.ए. या मंत्री के पास चले जाओ, वे भी मंहतों को मजबूती से पकड़े बैठे हैं। फिर भी बेईमानी चालाकी नहीं छुटती है। मैं तो यही कहूंगा कि इन गुरुओं में ही कमी है। उन बंदों में कोई कमी नहीं है। जिसके बेटा–बेटी नालायक हो जाते हैं तो उसके मां–बाप में कमी होती है। यदि राजा घटिया है तो रैयत भी घटिया बन जाएगी। सो इन गुरुओं में कमी है। इसी कारण उनकी संगत भी नहीं समझ सकती है। मेरे पास अगर कोई आता है और उनमें कोई कमी है तो वह उनकी कमी नहीं है। वह तो मेरी ही कमी है। मेरे पास जो आते हैं फिर भी वे गिरते हैं और गलत काम करते हैं, उनका कोई भी कसूर नहीं है। वह तो मेरी कमी है। मैं तो हमेशा से यही बात कहता हूं। सतगुरु दयाल हो जाता है तो फिर जिन्दगी सुधर जाती है। जीवन पवित्र हो जाता है। मेरे सतगुरु तो दयाल थे। उन्होंने बड़ी भारी दया की थी। उन्होंने जो दया की थी वह मैं बार–बार सत्संग में कह देता हूं। मैं तो दूसरे ही ढंग का स्वांग भरने वाला आदमी था। पर वैद्य डाक्टर तो वही बड़ा होता है, जो बीमारी देख

कर उसी का इंजेक्शन लगा दे। बीमारी कुछ है और इंजेक्शन दूसरा लगा देता है तो मौत ही आएगी। सो इन गुरुओं को इन बातों का ख्याल नहीं है। वे तो धन हड़पने की कोशिश करते हैं। वे उनकी जरूरत के अनुसार शिक्षा नहीं देते हैं। जिस आदमी के लिए दो रोटी का ही विघ्न है, जिसकी यही बीमारी है कि उसके पास दो रोटी और कपड़ा नहीं है, उससे अगर कोई यह कहे कि सुरत–शब्द का अभ्यास करो तो इससे तो वह कभी नहीं तिरेगा। बेशक गुरु उसे कह दे कि तू तिर जाएगा। पहले तो अपनी दो रोटी का ही प्रबन्ध करो। सतगुरु दयाल तो वही होता है जो डाक्टर के समान इंजेक्शन लगा देता है नाड़ी देखकर या बीमारी देखकर। सोचो ! मैं क्या कहता हूं। गुरु ने कह दिया कि तू सुरत शब्द का अभ्यास किया कर पर उसके बच्चे घर पर भूखे बैठे हैं। नहीं, कबीर साहब भी कहते हैं–

कबीर क्षुधा कूकरी, करे भजन में भंग।
ता को टुकड़ा डाल के भजन करो निःशंक।।

मैं अपनी छोटी उम्र में साधुओं के पास घूमा फिरा। मैं भी इस झमेले में से ही निकला हूं।

पेट न पाइयां रोटियां, सारी गल्लां खोटियां।

संत सतगुरुओं ने तो कमा कर ही खाया है। जो गुरु दो रोटी नहीं दे सकता है वह तुम्हें मुक्ति कैसे दे देगा? सो जब वह सतगुरु दयाल हो जाता है तो किसी चीज की भी कमी नहीं रहती है। दयाल के तो हाथों में सभी कुछ होता है और वह दयाल सभी कुछ दे देता है। फिर वह दयाल क्या देता है? वह दयाल शब्द का भेद देता है। शब्द सारी दुनिया के कर्ता को कहते हैं। सारी दुनिया का कर्ता वह राधास्वामी भी दयाल है। वह अकाल पुरुष है। वह रमा हुआ राम है। जो सारी दुनिया का कर्ता है, वही है। सतगुरु उसका पूरा पता बता देता है कि इस–इस तरह से काम करो। वह

नशे–विषयों से बचा लेता है। जब सतगुरु होकर अपने शिष्यों को नशे–विषयों में डालता है, आप भी नशे–विषयों का कीड़ा है तो बताओ वह दयाल तो नहीं है वह तो काल है। चाहे उस काल के पास जाओ चाहे कूएं में गिर कर मर जाओ। क्या लोगे उससे? सतगुरु दयाल की बातें कहता हूं। दयाल तो कबीर साहब थे। दादू जी, पलटू जी, नानक जी, घीसा साहब और गरीबदास जी थे। जितने भी सतगुरु आए वे दयाल ही बनकर आए। उन को किसी चीज की जरूरत नहीं थी। वे तो जीवों को लेने के लिये आते हैं। जैसे अस्पतालों में भाग्यवानों ने गाड़ियां लगा रखी हैं कि अगर कोई मरीज हो तो वे उन्हें बिना पैसे अस्पताल ले जाते हैं। सो वे उस दयाल के भेजे हुए ही आते हैं। वे डेरे धारी बनकर नहीं आते। वे आप तो मैदान में आते हैं और फिर जो कुछ बनता है वह खूब बन जाता है। क्योंकि वह काल महाराज गिराने के लिए कुबेर भण्डारी को और विश्वकर्मा को भी भेज देता है। पर अगर वे उनमें फंस जाते हैं तो वे भी मर जाते हैं। उनसे बचकर ही रहना चाहिए। सतगुरु दयाल उनमें फंसने नहीं देता है। वह शब्द का भेद देकर शब्द में लगा देता है। काफी लोग ऐसे भी होते हैं। मैं उनकी निंदा नहीं करता हूं। मैं तो उनकी बातें बताता हूं। काफी लोग इकट्ठे हो गए कि महाराज जी आए हैं। मैं भी उनसे वहां बातचीत करने लग गया। वे तीन चार आदमी थे। उनकी आंखे भी कुछ दूसरे ही ढंग की लग रही थी। मैं तो कहता हूं कि उनको सतगुरु दयाल नहीं मिला। उनको तो गुरु काल मिला। जो मां–बाप अपने बेटा–बेटी को जहर खाना सिखा देता है वह बाप नहीं है। वह तो कसाई है। जो सतगुरु बन करके अपने सत्संगियों को नशे–विषय सिखाता है। वह सतगुरु नहीं है वह तो कमीना है। वह तो काल है। वह जीवों को धोखा देता है। आप भी नीच कीच में गया फिर औरों को क्या उपदेश देगा? सो वे मेरे पास आए और बातें करने

लग गए। मैंने कहा कि ये किस गांव से आए हैं भाई? तहमद बांधे हुए थे। मैंने कहा कि मैंने अपनी छोटी उम्र में यही काम किए हैं। तुम क्या करते हो? तुम तो औरतों को बहकाते हो और हलवा खाते हो। बुजुर्ग आदमी यह बात सुनकर हंस पड़े। उन्होंने कहा–यही बात हो रही है। इनके पैसे भी लेते हैं और इनका हलवा भी खाते हैं। मेरी माताओं ! इस तरह से तुम गिर जाओगी। मेरी बात पर अमल करो।

साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।
जो भूखा धन का, वह तो साधु नाहिं।।

फिर साधु कैसा चाहिए?

साधु आया पाहुना, मांगे चार रत्न।
धूणी पानी साथरा श्रद्धा सारू अन्न।।

उन्होंने सभी नशे कर करके अपने शरीर बिगाड़ रखे थे। उन्होंने अपने आप तो कुछ नहीं पूछा। कोई सीधा सा बेचारा लड़का था। वह मेरे पास आया और बोला कि मेरी एक बात सुनना जी। मैंने कहा–बताओ, क्या बात है? उसने कहा–मेरी सुरत को अभड़ पुरुष ने रोक लिया है। अब मेरे दिल में खटका लगा। मैंने कहा–अरे सत्यानाशियो ! तुमने तो जीवों का नाश ही किया है। तुम्हारा भला कैसे होगा? तुम मेरे सामने आओ। बातें करो। अभड़ पुरुष कभी सुरत को पकड़ता और रोकता नहीं है। क्या आप लोगों को शर्म नहीं आती है? इसको कोई बात ठीक तरह से तो बतानी थी। अभड़ किसे कहते हो? यह दोहा मेरा नहीं है। यह कबीर साहब का दोहा है। सुनो–

अभड़ अभंगी पीव है ता का निर्भय दास।
तीन गुणों को मेहल कर चौथे किया निवास।।

बताओ अभड़ कैसे रोकेगा? तुम्हें शर्म आनी चाहिए। इतने बड़े–बड़े आदमी हैं। तीन गुणों की ही बातें कर रहा था जब मैं

आया था उसी वक्त भी। उन्होंने कहा कि तीनों गुणों को छोड़ कर चौथे गुण में निवास कर लिया तो कौन से गुण में गया? रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण तो वह आगे सार गुण में पहुंच गया। वहां सार ही सार है। किसने पहुंचाया? सतगुरु ने। फिर आगे कहते हैं–

आदि अंत और मध्य लो, अभड़ सदा अभंग। अभंग का मतलब भंग नहीं होता है।

आदि अंत और मध्य लों, अभड़ सदा अभंग।
कबीर ता कर्ता का कभी न छोड़े संग।।

तू कहता है कि अभड़ पुरुष ने मेरी सुरत रोक ली। कबीर साहब कहते हैं कि उस कर्ता का साथ कभी न छोडूं। आप बताइए। उन पर एकदम पटड़ा पड़ गया। इन लोगों को कैसे समझाएं, जो लोग पेट के पुजारी हैं? कबीर साहब ने सारी उम्र ताना तना। रैदास ने जूती गांठी। नामदेव ने लत्ते ठेके। सैन भक्त ने नाई का काम किया। धन्ने ने खेती की। पशु चराए। नानक साहब ने भी करतारपुर में खेती की और पशु चराए। गरीबदास ने पशु चराए। कौन ऐसा संत है जिसने कमा कर नहीं खाया? मैं भी गिरा हुआ था। मेरे सतगुरु ने बचा लिया। नहीं तो मैं तो मांगकर खाया करता था। कोई बरोले में कुछ डाल देता था। सो मांग कर खा लेता था। पर मुझे संतमत का पता नहीं था। संतमत का पता जब चला तो मैं अपने सतगुरु के पास चला गया। अब सतगुरु दयाल की बातें कहता हूं। तुम्हारा कोई दयाल हो तो बताओ। अगर उनमें ये बातें हों तो दयाल है नहीं तो दयाल होना बड़ा मुश्किल है। मेरा दाता तो दयाल था और उस दयाल ने मेरी जिन्दगी सुधार दी। सतगुरु दयाल की बातें बताता हूं। मैंने बड़ी आरतियां उतारी, बड़ी मालाएं फेरी। मैं इनका खण्डन नहीं करता हूं। इनकी पूजा करोगे उतना फल जरूर ही मिलेगा। पर मैं ये बातें

करता हुआ उनके पास पहुंचा। उन्होंने सब से पहले एक ही बात कही। क्या तू मेरे पास आया है? तूने तो एक स्वांग भर रखा है। कमा कर खाना पड़ेगा। मैं जब राधास्वामी मत में आया तो उस वक्त यह नेम किया था कि कमा कर खाऊंगा। सारी जिन्दगी मैं अपना आप गुजारा चलाऊंगा। मेरी पांच बीघे जमीन है उसी में काम चला लूंगा। मेरे सतगुरु ने मेरे ऊपर दया की। पर यही सारी दया नहीं हुई। दया तो बाकी रह गई। दया तो और ही है। यह तो शिक्षा थी। उन्होंने कहा कि लड़कियों के हाथ अपने पांव को कभी नहीं लगवाना। मैंने कहा कि मैंने तो कभी नहीं लगवाये हैं। दूसरी बात उन्होंने कही कि अकेली औरत से कमरे के अंदर बातें नहीं करनी। मैं खुला क्यों बोलता हूं? यह मेरे गुरु की मर्यादा है। उस पर चलता हूं। मैंने कहा–ये पक्की बात है। मैंने नेम कर लिया। मैंने कभी यह काम किया नहीं। किसी लड़की से बातें नहीं की और आगे भी मेरा यही नेम है। अगर मैं अकेला लड़की से कमरे में बातें करता मिल जाता हूं तो मेरे ये सत्संगी हैं, और मेरे पास 17 वर्ष से मास्टर रहता है मैं इसको मुझ से भी अच्छा समझता हूं क्योंकि बांझ जनने की सार को नहीं समझती है। मास्टर तो सभी कामों में से निकल कर आ गए। तुम लोगों को तो पता है। मुझे तो पता नहीं है। मैं कहता हूं, यदि कमरे के अंदर किसी लड़की से बातें करता हुआ मिल जाता हूं और मेरा मुंह देखोगे तो नर्क में चले जाओगे। क्योंकि मैं अपने गुरु की मर्यादा तोड़ने वाला बन जाऊंगा। गुरु के वचन को ही तोड़ दूंगा। आपने सुना होगा–

गुरु वचन पर डटगे, कटगे फंद चौरासी के।
गुरु वचन को त्यागै, दुख पावे पातक लागै।।
जाने न शारद शेष गुरु की माया।।

गुरु की महिमा को तो ब्रह्मा, विष्णु भी नहीं जान सके। यह

कबीर साहब की वाणी है। मेरे वश की नहीं है। सो मैं कह देता हूं कि अगर ऐसा काम करता हूं तो मेरा मुंह न देखना। दूसरी बात और भी कही कि तू देश–विदेश में खूब जाएगा। अगर कोई सेवा में चार पैसे दे तो अपने शरीर के लिए न बरतना। गुरु दयाल की बातें बताता हूं कि सतगुरु दयाल हुए। मैंने कहा कि बातें हो गई। अब आप बताओ कि एक लंगोटी का धनी, उलटा ही जंजाल में डाल दिया। पर मां अपने पुत्र को जहर नहीं देती है। सतगुरु भी हजारों माताओं की माता होता है। वह कभी भी अपने शिष्य को जहर नहीं देता है। वह उलटी शिक्षा नहीं देगा। मेरे मन में यह विश्वास था कि मेरा सतगुरु मेरे ही लिए आया है और शहनशाह है। मैंने कहा कि मैं कभी भी संगत के चार पैसे नहीं बरतूंगा। उन्होंने कहा कि तेरा काम तो तेरी पांच बीघे जमीन में ही चलेगा। 20–30 मन अनाज हो जाता है। दोनों काम कर लेता हूं। मेरे कपड़े भी आप साधारण देखते हो। जो महाराज जी की दया हुई सो ही मैं बताता हूं। सो उन्होंने कहा कि मेरी बात और सुनो। तुम कभी भी शामलात में आश्रम न बनाना। यह सतगुरु की दया है। मैंने शामलात में भी कोई आश्रम नहीं बनाया। अब उन्होंने कहा कि एक बात और भी सुनो कि सुलफा, शराब, दारू, भांग, चरस खाता पीता या बेचता हो तो उसके घर का अगर अन्न खा लिया तो गौ खाने जैसा पाप लगेगा। यह मेरे गुरु की शिक्षा थी। फिर उन्होंने यह भी कहा कि जब तक तू पचास वर्ष का नहीं हो जाता, अपनी उम्र वालों के साथ नहीं बैठेगा। सो ! गुरु तो इस तरह तारते हैं। अगर मेरे गुरु की शिक्षा पूरी नहीं होती तो आज मैं गिर जाता और आज दुनिया मुझे भी पता नहीं क्या–क्या कह देती। जिसने भी हाय–हाय की और पता नहीं क्या–क्या उन्होंने किया, उन सभी को नीचा देखना पड़ गया। मैंने दुराशीष किसी को भी नहीं दी और दूंगा भी नहीं। मेरे पास आदमी आ भी लिए हैं।

उन्होंने कहा कि यह तो फलां आदमी था। फलां ने ये बातें चलाई थीं। फलां ने यह किया था। मैंने कहा कि क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा–इज्जत हक का दावा कर दो। मैंने पूछा–फिर क्या होगा? उन्होंने कहा कि इनकी नौकरी छुट जाएगी। जेल हो जाएगी। मैंने कहा–क्या इतनी सी ही बात है? फिर तो यह कोई भी बात नहीं है। फिर मालिक हमारी मदद नहीं करेगा। हम अपने आप ही करने लग गए। मेरा कुछ बिगाड़ा तो नहीं। उन्होंने कहा कि नहीं। जब उन्होंने मेरा कुछ बिगाड़ा ही नहीं तो फिर मैं उनका बुरा क्यों करूं। यह तो बहुत बुरी बात है। नौकरी छुटवा दी तो पेट पर लात लगी और जेल हो गई। हम तो जेल से निकालने के लिए आए हैं। हमने जेल नहीं करानी है। हां, मेरी बूढ़ी–बूढ़ी माताएं उन दिनों रोती हुई आई थी और उन्होंने बातें भी यही कहीं कि अरे ! ये बातें फैलाने वाले! तेरा सत्यानाश हो जाएगा। उन वाली बातें तो मेरे वश की नहीं हैं। उनकी तो हाय से भरी जुबान है। वे तो मेरे वश की नहीं हैं। पर हमें तो फिर भी आशीर्वाद देना चाहिए। क्योंकि–

निंदक मेरा मत मरो जीओ आदि जुगादि।
हम तो ये पद पाइया निंदक के प्रताप।।

मैं तो जन्म से ही ये बातें सुनता रहा हूं। फिर क्या हुआ? सतगुरु पूरा मिल गया। सतगुरु की बातें कहता हूं–

सतगुरु हुए दयाल वा घर काहे की कमी।

सतगुरु दयाल हुआ। कौन सा सतगुरु? उस देहधारी गुरु ने ही नूरी गुरु से मिलवा दिया। गुरु गुरु से मिला देता है। तब शांति मिलती है और वही सब से बड़ा दान व सबसे बड़ा दायजा है। मेरे गुरु ने बातें तो काफी बता दी। ये बातें बड़ी नहीं हैं। उन्होंने मुझे यह बताया कि अठारह मंजिलों को तय करके ऊपर की गली में पहुंचो। तब पता लगेगा, सोलह गगन भी छोड़ जाओगे। जब

उन्होंने ऐसी बातें बताई तब मैंने स्वयं से कहा–कहां पागलपन में मैं फंस गया? तब उनकी बड़ी दया हुई। उन्होंने यह भी साफ कह दिया कि मेरे से बात न पूछना कोई भी। मेरे गुरु ने ये आर्डर दिया था। उन्होंने तो यही कहा कि मैंने जो बता दिया वह काम करना। मैंने अपनी हिम्मत करके काम किया। मैंने कभी कोई प्रश्न नहीं किया। मेरा कभी कोई प्रश्न हुआ तो वह आप ही हल होता चला गया। मेरे दिल में एक दिन एक प्रश्न उठा था। मेरे गुरु जी चले गए थे। मेरे दिल में ऐसा प्रश्न उठा और मैंने बड़ा भारी ख्याल किया कि तू तो बड़ा महात्मा बन गया है और इतना बड़ा महात्मा हो गया है कि दुनिया तेरे पांव पूजने लग गई है। मैंने ये बातें आपको बताई भी हैं। किसी ने आकर मेरे आगे रुपये चढ़ाए। मैंने पूछा–ये किस बात के हैं। उसने कहा–आपने मेरे घर जो आग लग गई थी उससे बचा लिया और एक आया तो उसने भी यही बात कह दी। किसी ने यह भी कहा कि भैंस गुम हो गई थी, मिल गई। मैं महाराज फकीरचन्द जी के पास चला गया। मैं आपको गुरु दयाल की बातें समझाता हूं। मैं वहां जाकर बैठा। वे बातें करने लग गए। उन्होंने मेरे से कहा–संत ताराचन्द! बेटा ! मैं एक बात तेरे से पूछ लूं? मैंने कहा–पूछ लो। उन्होंने कहा–एक अमरिकन गोरी आई हुई है। वह अपने लड़के को साथ लाई है। उसका लड़का बीमार था। वह सब डाक्टरों के पास जा चुकी थी। उसका लड़का ठीक नहीं हुआ। एक दिन उसने विनती की कि दुनिया में अगर कोई संत हो तो मेरे लड़के को ठीक कर दे। तो उसके आगे मेरा रूप प्रगट हो गया और मैंने उसके लड़के के लिये दवाई बता दी कि ये चीज खा लेना और मैंने इसको पूरा पता भी दे दिया। महाराज फकीरचन्द जी ने कहा–बेटा ! मैं तो वहां गया नहीं। मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। अगर मैं वहां गया हूं तो मेरे शरीर में कीड़े पड़ जाएं। मैं झूठ बोलता हूं तो मेरा नाश हो जाए। मैं तो

गया नहीं। न मैंने इसका घर ही देखा है। न मैंने इसको कभी देखा था। यह सब क्या था? मेरे पांव के नीचे की जमीन खिसक गई। मैं भी घबरा गया। मेरी भी यहीं शंका थी और यही पूछने के लिए आया था। मेरा तो पहले ही भ्रम दूर कर दिया। इन रोजगारियों ने महात्माओं ने, ऐसे कामों में अपने जीवन खराब कर लिए।

पूजा करते हैं कि महाराज ने मेरा यह काम किया, वह काम किया। कोई कहता है कि मेरी भैंस ढूंढ दी। कोई कहता है कि मैं आग में जल रहा था। आग बुझा दी। कोई कहता है कि पानी में डूबता हुआ निकाल लिया। कोई कहता है कि मैं इस तरह डूब रहा था। मुझे यह बात बता करके नफा करवा दिया। मेरा भ्रम दूर कर दिया। उन्होंने कहा–बेटा! यह सब उनके मन का ख्याल है। मैं आप लोगों को बताऊं कि यह उनका विश्वास है। अपनी करणी करना और उनके चार पैसे अपने शरीर के लिए न बरतना। यह पैसा खा जाएगा। इसीलिए तो ये महात्मा दुखी होकर मरते हैं। इसीलिए ये सत्संगी जो गुरु बने हैं दुखी होकर मरते हैं क्योंकि उनके पैसे खा जाते हैं। धोखा देते हैं। ये अज्ञानता के पैसे हैं। अब सतगुरु दयाल क्या करता है? सतगुरु दयाल शिक्षा देकर आगे चलने का भेद बता देता है। वह कौन सा भेद देता है?

कोई तो परखे मोहर अशरफी और कोए तो परखे लाल।

वे मोहर अशर्फी कौन सी हैं? छठे चक्कर से जो नीचे हैं वे तो धेले और पाई हैं। छठे चक्कर से ऊपर ब्रह्म में मोहर अशर्फी हैं। इसके ऊपर जाओगे, वहां लाल हैं। हीरे–मोती और जवाहरात भरे पड़े हैं। अब एक मिसाल देकर बताऊंगा। सतगुरु भ्रम को दूर कर देते हैं।

एक राजा था, उसने एक बहुत सुन्दर, बहुत बढ़िया मकान बनाया। उस मकान के सात हिस्से कर दिये। पहले भाग में

कौड़ियां डाल दी। दूसरे भाग में पैसे–धेले डाल दिए। तीसरे भाग में रुपये डाल दिए। चौथे में मोहर डाल दी। पांचवे में मोती, हीरे और जवाहरात डाल दिए। छठे में नौ–नौ करोड़ के लाल डाल दिए। पर राजा ने कहा कि जो सातवीं मंजिल पर चढ़ जाएगा उसको सारा राज दे दूंगा। अब मैं सतगुरु दयाल की बातें बताता हूं। सात ही मंजिलें थी। सातवें पर राजा बैठा था। उसका कहना था कि जो मेरे पास आएगा उसके सिर पर मुकुट रख दूंगा। अब सारा देश ही दौड़ पड़ा। सबने कहा–सातवीं मंजिल पर मैं जाऊंगा। मैं जाऊंगा। मकान में गए। जो छोटे–छोटे बच्चे थे वे तो कौड़ियों में ही अटक गए और थोड़े से बड़े थे वे पैसे, धेले, चुगने लग गए और जो उनसे बड़े थे वे रुपये इकट्ठे करने लगे। कइयों ने कहा–आगे जाने में क्या रखा है। हीरे–मोतियों से झोली भर लो और जिन्होंने हिम्मत की तो छठी मंजिल पर लाल पड़े थे। उन लालों की गठड़ी बांध ली और चल पड़े। पर एक हिम्मत वाला शेर भी था। उसने कहा–मुझे तो इनकी जरूरत नहीं है। मैं तो धुर जाऊंगा। वह सातवीं मंजिल पर पहुंच गया। वह सीधा राजा के पास गया और राजा ने पहुंचते ही उसके सिर पर ताज रख दिया। वह राजा बन गया। अब वे सारे हीरे और मोती सभी कुछ उसके काबू में आ गए। सब कुछ ही उसके हाथ में आ गया। इसका नाम है दानी। इसका नाम है दयाल। इसके ऊपर तो दया हो गई कि सब के सब ही उसकी मुट्ठी में आ गए। जिन्होंने हीरे जवाहरात और लाल उठाए थे वे भी तो उसी के मातहत हो गए। कौड़ियों से लेकर लाल वालों तक सभी मातहत हो गए उस राजा के। सो संतमत में–

कोई तो परखे मोहर अशर्फी कोए तो परखे लाल।
संत तो परखें नाम हरि का, हो गए मालो माल।।

नाम भी परखना पड़ता है। नामों की न्यारी–न्यारी मंजिलें

हैं। इसीलिए सतगुरु की बड़ाई करनी पड़ती है। एक गुरु होता है और एक सतगुरु होता है। सतगुरु जब मिल जाता है तो लेखा निमड़ जाता है।

सतगुरु मिलिया, लेखा निमड़िया।

सतगुरु उसे ही कहते हैं। सतगुरु की महिमा बड़ी भारी है। सो नाम तो कई हैं। छठे चक्कर के नीचे के नाम देते हैं। यह तो कब्रें खोदना है। उनका फल जरूर ही मिलेगा। पर उतने ही परिश्रम से सतलोक में भी पहुंच सकते हो। उतनी ही मेहनत करके भी यहीं रह जाओगे। यदि कोई देवता खुश हो गया तो बेटे–पोते, धी–जंवाई, धन–जायदाद मिल जाएगी पर रहना तो यहीं है। यहीं रह जाओगे। गीत गाकर चले जाओगे। जब संत अभ्यास करते–करते अपने शिष्यों को वह शक्ति देते हैं और अठारह मंजिलों का भेद बताते हैं और जब वह अभ्यास करके चलता है, उन नामों को परखता परखता चलता है तो वह राधास्वामी दयाल के देश में पहुंच जाता है। उस ऊंची मंजिल पर चला जाता है वह। और सभी नाम उसके मातहत रह जाते हैं। यह बात वही समझेगा जिसने नाम का सहारा लिया हुआ है। नाम का भी सहारा जिसे शब्द भेदी सतगुरु का मिला है। शब्द भेदी सतगुरु जो अठारह मंजिलों का वाकिफकार हो। वही पता दे सकता है और वही उस बात को बता सकता है। वही दयाल माना जाता है। सारी मंजिलों से निकाल कर वह ऊपर ले जाता है। इसीलिए कहते हैं कि **सतगुरु मिले दयाल वा घर काहे की कमी।** सतगुरु जब दयाल मिल जाता है तो फिर कभी किसी चीज की भी कमी नहीं रहती है। वह पाखण्ड में नहीं फंसाता है। सतगुरु दयाल तो ऊंची मंजिलों पर ले जाता है और उस मंजिल पर ले जाकर बता देता है कि तेरा घर यह है। यहीं से यह बूंद बिछुड़ कर गई थी और यहीं पर वापिस आ गई है। वह यह भी बता देता है कि जिस घर से सुरत

बिछुड़ कर आई थी उसी घर में जाने से शांति मिलती है। वह उस जगह पर पहुंच जाती है। आप प्रश्न भी कर सकते हो कि आई क्यों थी? कोई बात नहीं आ भी जाया करते हैं। यह किस तरह आई थी? जब राजपूतों में लड़की की शादी करते हैं तो ऊंट देते हैं, डोला देते हैं। बांदी और गोला देते हैं साथ ही दो बैल देते हैं। बहुत सी चीजें देते हैं। वे दान में देते हैं। इसी प्रकार से जब काल महाराज ने तप किया और जब दयाल खुश हुआ तो उसने काल से पूछा कि क्या चाहिए? उसने कहा कि रूह दे दो। सो यह तो दान में ही आई थी। इसको काल महाराज ने निकलने नहीं दिया। किसी को तीर्थ में फंसा लिया और किसी को होम यज्ञ में, पूजा–पाठ में। सभी को इनमें फंसा लिया। प्रश्न कर सकते हो कि क्या यह उरला व्यवहार है। हां ! ये उरला व्यवहार ही है।

राजा नग करोड़ गौ रोज दान करता था। वह गिरगिट बना था। यह मैं तुम्हारे शास्त्रों की बातें कहता हूं। मेरी नहीं हैं। अगर तुम ज्यादा बड़ी पुस्तक देखना चाहते हो तो अपनी 'आत्म पुराण' को जाकर देख लो। ये मेरी सुनी हुई है। बलि ने बहुत यज्ञें की थीं। पाताल का राजा बना दिया था। ज्यादा कुछ देखना चाहते हो तो तुलसी साहब संत थे। उनकी घट रामायण देखो। एक दम निर्णय ही हो जाएगा। मैंने ये बातें सुनी हैं तब कहता हूं। मैं आपको यही बात बता रहा था कि नाम की ही महिमा है। जब अभ्यास करते हुए चलोगे तो उस नाम का पता चल जाएगा। संत महात्मा आगे ले जाते हैं। संत बुराई नहीं करते हैं। वे खण्डन नहीं करते हैं। आप कहोगे–क्यों? नहीं। वे भेद बताते हैं। बुराई करने वाले तो और ही आदमी हैं। हम उन बुराई करने वालों के खिलाफ हैं। बुराई तो कभी भी किसी की नहीं करनी चाहिए। बुराई करने वाला जुल्मी होता है। जो दूसरों की, अवतारों, देवी–देवताओं की बुराई करता है उससे बड़ा नास्तिक कोई नहीं होता है। उनकी

बुराई मत करो। उनकी हद बता दो। यह बुराई नहीं है।

सत्संगियों ! हद बताने में बुराई नहीं है। बुराई तो यह है कि उसके गंदे–गंदे गीत गाए और कहे कि इनको मारो और चलो, ये हैं और वे हैं। ये सब बुराई है। उनकी हद बताने में कोई बुराई नहीं है। जिस हद तक ब्रह्मा, विष्णु काम करते हैं, वे स्वर्ग, वैकुण्ठ दे सकते हैं। यह उनकी बुराई नहीं है। देवी–देवता सब अपने लोक में ले जा सकते हैं। पर यह ख्याल रखो, उनकी मुक्ति मियादी है अनादि नहीं है। ये सब अपने शास्त्रों में देखो। सो जो सतगुरु दयाल आता है, वह काल और माया से निकाल कर ले जाता है। वह कैसे निकालता है? वह एक दिन सब बातें बता देता है। उन बातों को समझ कर वे उस काम में लग जाते हैं। वे उससे निकल जाते हैं। आप कहोगे कि तीन लोक में से कैसे निकले? तीन लोक से निकलने का मतलब यह नहीं है कि तीन लोक से आगे डंग भर गए। तीन लोक तो तीन जगह बताते हैं। पर तीन लोक से डंग भरना यह नहीं है। फिर कहा है–

त्रिगुण विषय वेदा। निःत्रिगुण भव अर्जुन।

कष्ण जी ने कहा कि तीन गुणों से आगे चलो। तीन गुणों की भक्ति में फंस रहा संसार। मैं संतों ऋषियों की बातें बताकर तसल्ली कराता हूं। इन तीन गुणों से आगे चले जाओगे तो चौथा लोक आ जाएगा। इन तीन गुणों में रहोगे तब तक तीन गुणों की भक्ति से बाहर निकल नहीं सकोगे। इन तीन गुणों से आगे कब निकलोगे? बैर बांधने और बुराई करने से नहीं निकल सकते। जैसे साधन व अभ्यास बताया है उस तरह करते रहो। टिको मत आगे चलते रहो। महाराज शिवव्रतलाल ने कहा है कि यह तो छः महीने का कोर्स है। पर मैं तो आप लोगों को बताता हूं कि छः महीने का नहीं। कोर्स तो जल्दी भी हो सकता है। मैंने आपको कइयों के हवाले दिए हैं। उन्होंने छः महीने कहां लगाए थे? ये बात जरूर है,

उनके विचार पवित्र थे। काम तो जल्दी से जल्दी बन सकता है। पर पहले विचार पवित्र करोगे तब जल्दी बनेगा। अगर विचार पवित्र नहीं हैं तो चाहे बीस–बीस घंटे ध्यान में बैठ लो, मन नहीं टिकेगा। जब दूध शराब के बर्तन में डालोगे तो वह फट जाएगा। कचरी का एक बीज ही दो मन दूध को फाड़ देगा। इसीलिए पहले भांडा पवित्र होना चाहिए। यह इंसान का चोला बहुत पवित्र होना चाहिए। अगर कामी, क्रोधी है तो एक कौड़ी का भी नहीं है, लोभी, अहंकारी है या मोह में फंसा बैठा है तो भी एक कौड़ी का नहीं है।

विषयन से जो रहे उदासा, परमार्थ की जा मन आशा।
धन, संतान प्रीत नहीं ता के। खोजत फिरै साधु गुरु जागे।।

जब विरह उठती है तो साधु महात्माओं की शरण में जाते हैं। जो अपनी वत्ति को ऊपर ले गए वे पवित्र हो जाते हैं। जब आत्मा पवित्र और निर्मल हो जाती है तो भजन करना तो मामूली बात है। इस तरह जल्दी से जल्दी चले जाएंगे। पर मैं आप लोगों को यह बताता हूं कि ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले खुद ही बिना गुरु के भी ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। मैंने आर्य समाजियों की पुस्तक **'धर्म-शिक्षा'** किसी वक्त में सुनी थी। उस पुस्तक में लिखा था। मैंने भगवान देव आचार्य से गायत्री सीखी थी। अब भी मैं उनकी इज्जत करता हूं। क्योंकि वह जो बात जानता था उसने असली बात बता दी। प्राणायाम सिखाया। पर संत सतगुरु जब मिला तो वे सारे नीचे छोड़ दिए। प्राणायाम तो वहां कुदरती ही हो जाता है और वह नाम है। उस वक्त की गायत्री क्या थी? गायत्री जो असली होती है वह तो यह है–

औ३म् भूः औ३म् भवः औ३म् स्वः औ३म् महः औ३म् जन
औ३म् तप और औ३म् सत्।

जिसको उपदेश का पता है वह इन मंजिल–मंजिल जाकर पहुंच जाओ। अभ्यास के बिना बेचारी गायत्री क्या करेगी? गायत्री

तो गायत्री है। चार वेदों की मां है। वह अपनी हद तक काम करती है। पर सतलोक में पहुंचने के लिए किसी काबिल महात्मा की शरण लेनी पड़ेगी। आज प्राणायाम करने वाला कोई बिरला लाखों में एक ही मिलेगा। पर सुरत शब्द के अभ्यासी काफी मिल जाएंगे। क्यों मिल जाएंगे? क्योंकि वह जमाना था जब लोग घी, दूध खाया करते थे। सदाचारी रहते थे। चार अवस्था उनकी भी बताई थी। ब्रह्मचर्य, गहस्थ, वानप्रस्थ और फिर सन्यास आश्रम।

संतों ने चार ये बता दिए कि पहली गुरु भक्ति। दूसरा नाम, तीसरी मुक्ति और चौथा निज धाम। स्वामी जी ने बताया है–

गुरु भक्ति दढ़ के करो, पीछे और उपाय।
बिना गुरु भक्ति मोह जग कभी न काटा जाय।।
मोटे बंधन जगत के, गुरु भक्ति से काट।
झीने बंधन चित्त के, कटें नाम प्रताप।।
मोटे जब तक जाएं नहीं, झीने कैसे जाहिं।
ता ते सब को चाहिए, नित गुरु भक्ति कमाय।।

फिर कहते हैं–

एक जन्म गुरु भक्ति कर जन्म दूसरे नाम।
तीसरे में मुक्ति पद, चौथे में निज धाम।।

स्वामी जी महाराज की बातों का तो मुझे पता नहीं। मैं तो अपनी ही बातें बताता हूं। मेरी बातें अच्छी लगें तो रख लेना। ना छोड़ देना और किसी को बता देना। पर एक जन्म गुरु भक्ति, जब तुम साधन करते–करते नौ द्वारों से आत्मा को निकाल कर दसवीं गली में पहुंचोगे उस वक्त गुरु का स्वरूप आगे आ जाएगा। गुरु के आप को नूरी दर्शन हो जाएंगे। काफी संगत है। कइयों को हो रहे होंगे। सारी बम्बी तो निष्फल नहीं जाती है। इसे कहते हैं–

साहेब नूर, नूर के सेवक नूर ही की नगरी है।
सूक्ष्म सेज पर तेज चमके सो घर परा परी है।।

मैं वही बातें बताता हूं कि सतगुरु हुए दयाल। उस दयाल की बातें बताई हैं। नितानंद की बातें थीं। जब गुरु का रूप प्रगट हो जाता है तो फिर समझो कि हमारा जीवन सफल हो गया। हमारी एक अवस्था जो 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य की थी वह बन गई। अब रहा गहस्थ आश्रम, जैसे हमारे ऋषियों ने चार हिस्से बताए थे। एक जन्म गुरु भक्ति और जन्म दूसरे नाम।

जब गुरु का स्वरूप प्रगट हो जाता है और तुम्हारी सुरत ऊपर जाती है, तब जो धुनि उठती है, उस धुनि को सुरत पकड़ती है। इसे नाम कहते हैं। लिखने–पढ़ने में जो नाम आता है वह नाम नहीं है। नाम भी दो हैं। एक धुनात्मक है और दूसरा वर्णात्मक। लिखने वाले के बारे में तो कहा जाता है कि–

लिखने में गए भुलाई। दर-दर के धक्के खाई।।

वह नाम लिखने पढ़ने वाले नाम से अलहदा है। सो एक जन्म गुरु भक्ति और जन्म दूसरे नाम। असली नाम होता है वह धुनी से प्रगट होता है और कबीर ने उसकी ठोंक कर पुष्टि की है। कहते हैं–

माला फेरूं न हर भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा साईं मौको भजै, तब पाऊं विश्राम।।

अर्थात मेरा मालिक मुझे भजे तब मैं विश्राम पाऊं। वह विश्राम कौन सा होगा? मतलब वह धुनि खुद ही गूंजेगी। नानक साहब भी कहते हैं–

ऊंचे खासे महल में, देवे बांग खुदा।
सूता बांग न सुनिए, रहा खुदा जगा।।

हर वक्त वे बांगें उठती रहती हैं हमारे अंतर में और जगाने वाला बैठा रहता है। यह पूरे सतगुरु की महिमा है। सो–

सतगुरु मिलिया, लेखा निमड़िया।

उनका काल का कर्जा चूक जाता है। सो आगे कहा है कि-

तीसरे में मुक्ति पद।

जब नाम की धुनि सुनने लगे तो दसवां द्वार आ गया, उसी को हिन्दू मुक्ति पद कहते हैं।

फिर चौथे में निज धाम। निज धाम कौन सा है? स्वामी जी कहते हैं–

सतलोक सब नीच नीचानी। वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।
अलख, अगम, अनामी। वाह मेरे प्यारे राधास्वामी।।

नानक साहब भी कहते हैं–

सतलोक से आगे ध्यावे। वह अलख अगम की गति पावे।।

संतों का मार्ग बताता हूं। तो उसने क्या बता दिया? जब साधन अभ्यास करते–करते चौथे में चला गया वह निज धाम है। यह निज धाम ऐसा है कि वहां धुनि होती रहती है। हिन्दू तो दसवें द्वार को मुक्ति कहते हैं। मुक्ति क्या है? तीन लोक की मुक्ति वहीं तक मानी जाती है। आगे नहीं मानते हैं और उसके न्यारे–न्यारे नाम हैं। उसी को किसी ने निर्वाण पद कह दिया। किसी ने उसको मान सरोवर कह दिया। किसी ने अमतसर का तालाब कह दिया। किसी ने त्रिवेणी कह दी। न्यारे–न्यारे नाम दे दिये। संतों ने उसी को सुन्न कह दिया। जब उस देश से आगे चले जाते हैं तो आगे वह निज धाम है। निज धाम किसको कहते हैं? वहां की गई हुई सुरत वापिस नहीं आती है। सो जो उसका पूरा पता दे देता है उसी का नाम है सतगुरु दयाल। वह दया करता है। वहां कर्म का खेल भी नहीं है। कुछ भी नहीं है। सारे ही कर्म नीचे रह जाते हैं। वह तो दयाल के देश में पहुंच जाता है। कबीर साहब ने भी यही कहा है–

जहां पुरुष वहां कुछ नाहीं, कहें कबीर हम जानी।

ऐसा कबीर साहब कहते हैं कि जहां दयाल है वहां कुछ भी नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि–

पाप पुण्य दोनों नहीं म्हारी हेली, निर्गुणियों के देश।

ये दोनों नीचे ही रह जाते हैं। स्वामी जी ने भी यही कहा है–

सुरत हुई अतिकर मगनानी। पुरुष अनामी जाय समानी।।

सुरत अनामी में जाकर समा गई। इसे संतों ने कहा है सुरत निज धाम में पहुंच गई। मैं यही बता रहा हूं–

सतगुरु हुए दयाल वा घर काहे की कमी।

यह भी बता दिया–

कोई तो परखे मोहर अशर्फी कोए तो परखे लाल।
संत तो परखैं नाम हरि का, हो गए मालो माल।।

संत तो हरि का नाम परखते हैं। नाम तो धुनात्मक ही है, वर्णात्मक नहीं है। वर्णात्मक नाम में ही फंसे रहे तो परख लिया। यह तो नीचे का ही नाम है। पर काफी लोग तो वर्णात्मक नाम ही जपते हैं। उनको परखने और बताने वाला मिला ही नहीं है। मैंने बड़े चक्कर काटे, पांच वर्ष की उम्र से ही इन झमेलों में पड़ने लग गया था। मुझे यही ख्याल था कि किसी महात्मा की शरण लूं, अब कहते हैं–

जा को दर्शन इत है, वा को दर्शन उत्त।
जा को दर्शन इत नहीं, वा को इत न उत्त।।

अगर इस जिन्दगी में शांति नहीं है तो मर कर भी शांति नहीं आएगी। शांति कब आएगी? जिनको सतगुरु दयाल मिल जाते हैं उनको शांति आ जाती है। आपने नाम तो ले लिया। नाम लेने से तो शांति नहीं आती है। सतगुरु दयाल भी तो उसी वक्त मिलेगा जब नाम मिलेगा। नाम दूसरी चीज है और सतगुरु दयाल दूसरी चीज है। आप कहोगे कि मठ ही मार दिया और हमारी तो श्रद्धा ही तुड़वा दी। आपने कह दिया कि नाम दूसरी चीज और सतगुरु दयाल दूसरी चीज है। सतगुरु तो समझ और ज्ञान को कहते हैं।

विवेक और शब्द को कहते हैं। जब उस शब्द में पहुंच जाते हो तो सारे ही संशय और भ्रम दूर हो जाते हैं।

जिनको सतगुरु मिलिया, उनका लेखा निमड़िया।

सो उस वक्त सारे भ्रम दूर हो जाते हैं। वह शब्द ही सारी दुनिया का और सब किसी का दयाल है। शब्द से ही सब कुछ बना है। उसके पास अगर पहुंच गए तो बेड़ा पार है। सो दयाल मिल गया तो गुरु से मिला देता है। कैसे? शब्द की कमाई करने वाला अपने शिष्य की कमाई करवा कर अपने घर पहुंचा देता है। पर आप कहोगे–क्या सारे अपने घर पहुंच जाएंगे? नहीं एक आध भी अगर वहां चला जाए तो औरों का भी डग्गा लग सकता है। इस लाइन पर चलने के बाद में बहुत सी चीजों में शांति मिल जाती है। शक्ति बढ़ जाती है और यह भी पता लग जाता है कि मालिक तेरे अंदर है। तू उस मालिक में है और वह हर वक्त बचता रहता है। सो सतगुरु की पहचान बताई है।

कोई तो परखे मोहर अशर्फी कोई तो परखे लाल।

संत कौन से नाम को परखते हैं? नाम तो बहुत हैं। हरि का कौन सा नाम परखते हैं? हरि ओ३म्, तत्सत् ओ३म् और राम, वाहे गुरु अकाल पुरुष, शब्द स्वरूपी राम। राधास्वामी, ओहं–सोहं। मैं कितने नाम बताऊं? नाम तो सभी परखते हैं। सब ही जानते हैं। पर ये नाम, नाम नहीं हैं। सारी जिन्दगी राधास्वामी–राधास्वामी कहने से नहीं। राधास्वामी धाम में पहुंचने पर ही बेड़ा पार होग। राधास्वामी नाम क्या है? ओ३म् भी राधास्वामी है। सोहं भी राधास्वामी है। सतनाम्, अलख, अगम भी राधास्वामी है। राधास्वामी धाम में पहुंच गए वह तो असली राधास्वामी है ही। अब यह बात सुनकर आपके दिल में कोई ख्याल उठा होगा? इसको कहते हैं कि सतगुरु मिले दयाल। कैसे? वह राधास्वामी ओ३म् कैसे बना? लफ्जों से जो ओ३म् कहते हैं तो यह नहीं है। लफ्जों से राधास्वामी

बोलते हो यह भी नहीं है। राधा नाम सुरत का और स्वामी नाम शब्द का है। जब ओ३म् की मोहिनी धुनि होती है, वह बताओ राधास्वामी बना कि कुछ और बन गया? उस सोहं की जब हम धुनि सुन लेते हैं तो फिर राधास्वामी ही हुआ या कुछ और। जब तक उस धुनि को नहीं सुना तब तक वह राधास्वामी धाम में पहुंच नहीं सकता है। सो ही कहा है–

राधा आदि सुरत का नाम।
स्वामी आदि शब्द निज धाम।।
राधा प्रीत लगावन हारी।
प्रीतम स्वामी नाम कहा री।।

राधास्वामी नाम सुरत और शब्द का है। सुरत शब्द का साधन या योग करता है। योग मिलाप को ही कहते हैं। सुरत शब्द से मिली तो योग हो गया। जन्म–मरण मिट जाता है। सो संतों ने बड़ी बड़ाई यही की है कि सतगुरु दयाल का भेद दिया है। दयाल का घर बड़ी दूर है। दयाल उसी को कहते हैं जो शब्द का भेद दे। शब्द का भेद देने से हम बार–बार भटकते नहीं हैं। इसीलिए दयाल का रास्ता बताता है। और सारे तो हैं पर वे अपने ही दायरे के दयाल हैं। वह दयाल दायरे से बाहर का दयाल है। वह सारी दुनिया का कर्ता दयाल है। इसका कोई भेद दे तो जन्म–मरण मिट जाता है।

राजा राणा पच-पच मर गये हुए हाल बेहाल।
संत भरोसे नाम हरि के भय माने भोपाल।।

आपने भी देखा है कि राजा लोग तो मेहनत कर–कर के पच कर मर गए। एक मिसाल याद आ गई है। महाराज जी बताया करते थे कि एक राजा था। वह ऊपर बैठा था। एक महात्मा आ गया। महात्मा वहां पत्तों को चुन–चुन कर खाने लग गया। राजा ने देखा कि यह तो बेचारा भूखा है। इसको खाने को दे दो। कई

कहते हैं कि वह दाल का छिलका खा रहा था। वह खाकर पेट भर कर बैठ गया। राजा ने आदमी भेजा। राजा ने कहा–उस भूखे को लड्डू दे देना। उसने कहा–मैं तो भूखा नहीं हूं। आप किसी और भूखे को दे देना। वह वापिस ले गया और उसने राजा को कहा–उसने तो यह कहा है कि लड्डू भूखे को दे देना। राजा ने कहा–उसने ठीक बात कही है। मैंने उसको एक राजा होकर भी क्या दिया? कम से कम 10-15 सेर मिठाई देनी चाहिए थी। राजा ने इस बार बहुत सी मिठाइयां बांध कर दे दी। वह आदमी फिर गया। उसने कहा–लो महाराज ! राजा ने दी हैं। उसने कहा–भाई मैं इनका क्या करूंगा? आप इसको किसी भूखे को दे देना। राजा आया और उसने खुद ही आकर दस हजार रुपए की थैली उसके आगे डाल दी। राजा ने कहा–यह ले लो। उसने कहा–महाराज ! ये रुपये आप संभालो। उसने फिर वही बात कह दी–राजन् ! मुझे तो जरूरत नहीं है। किसी भूखे को दे देना। राजा ने कहा–तेरे से भूखा कौन है बैरी। तू यहां बैठा दाल का छिलका खाता था। पर मैं वो खाकर शांति से बैठा हूं। मेरे दिल में कोई दुख नहीं है। मैं भूखा नहीं हूं। भूखा जो होगा उसको मैं बता दूंगा। राजा ने कहा–तू मुझे भूखा बता। उसने कहा–मैं वक्त पर बताऊंगा। मेरे पास 2-4 किले जमीन के हैं। तू वह जमीन ले ले और दो चार रानी भी हैं। राजा ने कहा–वह जमीन तेरे तो किस काम की है। यह तो हमें दे दे। हम राजा हैं। वे रानियां हैं। वे भी हमें दे दे। तू उनका क्या करेगा? उन औरतों को भी हमें लाकर दे दे। उसने कहा–आप ठहर जाओ। वे सब आपको दे दूंगा। उसने राजा का हाथ पकड़ कर उसके मुंह पर थप्पड़ मारा। महात्मा ने उस राजा से कहा–तेरे से भूखा तो कोई भी नहीं है।

तष्णा नहीं भरती बड़ी लंबी चौड़ी है।
नित नया चाव है, आगे-आगे दौड़ी है।।

किया न संतोष, नहीं सुरता मोड़ी है।
समझ विचार भाई, जिन्दगी थोड़ी है।।
छोड़ के विभूति सारी खाली जावेगा।
अंत समय में राम-नाम कैसे गावेगा।
किया न अभ्यास, याद कैसे आवेगा।
करता है कुसंग बैठे खोटी टोली तू।
मेरी तेरी बात लावे, फोली-फोली तू।।
कूप का है नीर, नहीं ले रहा डोली तू।
तराजू नहीं पास, करे तका तोली तू।।
भरम की है बुर्ज कहो कैसे ढावेगा।
किया न अभ्यास याद कैसे आवेगा।।

महात्माओं की यह सुनी हुई वाणी है। सो उसने उसको कहा–तेरे से भूखा तो कोई भी नहीं है। जिसकी लंबी चौड़ी तष्णा है, वह भरती नहीं है। वह भूखा है। सच्चाई से कहता हूं। मालिक मेरे ऊपर दया करे। सतगुरु मेरे विचार गन्दे न करें। मैं कहीं भी बाहर चला जाता हूं तो मुझे ये डेरे याद नहीं आते हैं। न इन डेरों से मैं बंधा हुआ हूं। आप कहोगे आप दिनोद क्यों रहते हो? यह तो मेरी जन्म भूमि है, वहां बैठा हूं। डेरा वहां भी है। ये कहते हैं कि आप को कोई तकलीफ है तो यहां आ जाओ। तकलीफ तो मुझे कोई भी नहीं है। तकलीफ तो बारात में हुआ करती है। तकलीफ तो ब्याह में ही हुआ करती है। तकलीफ तो बच्चों को होती है। मुझे किसी बात की तकलीफ नहीं है। सो ही मैं आपको बताता हूं कि इन चीजों का स्वप्न आता है। जमीन का, जायदाद का, बच्चों का तो समझो कि अभी निकले नहीं हैं। जब इनका स्वप्न बंद हो जाता है तब समझ लो कि जाल से निकल लिए हैं। यह मैं बता देता हूं। अगर साधु महात्मा जैसे दादू, पलटू, कबीर, नानक दिखते हैं तो समझो कि अब हमारा भाग जाग गया है। हमारे ऊपर संतों

की दया हो गई है। हमारे विचार पवित्र हैं। हमारे दिल के विचार निकल रहे हैं। तब सतगुरु दयाल होते हैं। तो इसने कहा–

राजा राणा पच-पच मरगे, हुए हाल बेहाल।
संत बेचारे राम भरोसे, भय माने भोपाल।।

संतों के पास तो राजे–महाराजे भी बंदगी करते हैं और वे कहते हैं–आप हमें भी बताओ जी। हमारा किस तरह उद्धार होगा? जब उनके पास आते हैं तो जूती निकाल कर चलते हैं और घुटनों के बल आकर बंदगी करते हैं। अगर महात्मा है तो। महात्मा किस का नाम है। महान आत्मा का नाम महात्मा है। संत उसी का नाम है जो शील में समा जाता है। साधु नाम तो उसी का है जो साधन करता है। सो जो काम करता है वह पहुंच जाएगा। उस हद में है और उसका वही नाम बन जाएगा। संत बनो तो सहन करना सीखो। सहन करना ही नहीं सीखे तो तुम्हें संत कौन कहेगा? अगर सहन करना सीख गए तो बड़े–बड़े राजे–महाराजे अपने आप सिर झुका देंगे। आकर बंदगी करेंगे कि किसी तरह हमारा भी उद्धार हो जाए। पर ऐसे–ऐसे राजे–महाराजे भी हैं जो खाल भी उधड़वा देते हैं। बाबर बादशाह ने नानक साहब से चक्की पिसवाई। रविदास के हाथ कटवा दिए। देखते हैं कि जूती कैसे बनाएगा? किस–किस की पूछोगे? सिकन्दर ने चालीस कोस का खजाना भर दिया। सारी दुनिया का धन इकट्ठा करके चालीस कोस का खजाना भर दिया और फिर उसने सोने–चांदी, हीरे–मोतियों में मढ़ कर एक घोड़ा छोड़ दिया। उसने कह दिया अगर कोई इसे ले तो सवा रुपये में ही घोड़ा दे दूंगा। सवा रुपया दे दो। अब पैसा तो उसने किसी के पास छोड़ा ही नहीं था। वह तो देख रहा था कि किसी के पास पैसा रह तो नहीं गया है। एक मुसलमान बुढ़िया थी। उसका इकलौता बेटा था। वह रोने लगा। बुढ़िया ने पूछा कि क्या बात है, बेटा ! लड़के ने कहा–घोड़ा लूंगा। उसने कहा–बेटा!

सिकन्दर बादशाह ने मेरे पास या किसी के पास भी चार पैसे नहीं छोड़े। मैं सवा रुपया कहां से लाऊं? उसने कहा–मां मैं तो लूंगा। अब ! मां तो मां ही होती है। अरे प्रेमियो ! जो मां की सेवा कर लेता है उसका हर तरह का सारा भार उतर जाता है। मां की सेवा से पथ्वी पर किये हुए सभी पाप उतर जाते हैं। आसमान के सभी देवताओं को खुश करना चाहो और अपने पाप उतारना चाहो तो बाप की सेवा से सब ही उतर जाते हैं। पर मां–बाप तो फिर भी स्वार्थी होते हैं। सतगुरु स्वार्थी नहीं होता है। सतगुरु तो निस्वार्थ काम करते हैं और वे कहते हैं मेरा शिष्य मेरे से भी हजारों दर्जे बड़ा हो। अब उस बुढ़िया ने कहा–बेटा ! तेरा बाप मरा था उस वक्त सवा रुपया कब्र में डाला था। वह बुढ़िया उस कब्र को खोद कर सवा रुपये को निकाल लाई। उसने लाकर सिकन्दर को दे दिया। उसने कहा–तेरा यह घोड़ा मेरे बेटे को दे दे। सिकन्दर ने कहा–यह बता कि यह सवा रुपया तू कहां से लाई? पैसा तो सिकन्दर ने कहीं छोड़ा ही नहीं था। बुढ़िया ने कहा–जब मेरा बेटा रोया तो यह सवा रुपया कब्र में रखा था, उसे निकाल कर ले आई। सिकन्दर ने कब्र खुदवा कर भी रुपये निकलवा लिए। चालीस कौस खजाना इकट्ठा कर दिया। मैंने ये बातें आप लोगों से सुनी हुई हैं। जब वक्त आता है तो कोई काम नहीं आती। वह बहुत बीमार पड़ गया और अन्त समय समीप आ गया तो उसने कहा–मैं आधा धन दे दूंगा अगर कोई मेरी मां से जाकर मिलने तक के सांस दे तो। वैद्यों ने कहा दिया कि बच्चू अब एक मिनट भी नहीं बच सकता है। उसने कहा–मैं सारा ही खजाना दे दूंगा। कोई मेरी मां से मुझे मिला दो। उन्होंने कहा–अब नहीं बच सकता है। तब सिकन्दर ने टक्कर मारी, हाए ! मैंने वक्त की कद्र नहीं समझी। मैंने अपना सारा ही टाइम वथा खो दिया।

कहता हूं कह जाता हूं, काहे बजाऊं ढोल।
सांसा खाली जात हैं तीन लोक का मोल।।

एक सांस का मोल तीन लोक के बराबर है और वह खाली जा रहा है। रात–दिन में 21606 सांस आते हैं। ऐ इंसान ! तू परमात्मा की भक्ति के बिना इन सांसों को खोता है। तेरे जैसा कमीना और गिरा हुआ तो कोई भी नहीं है। विषय–विकारों में अपनी जिन्दगी बर्बाद करता है। फिर तो तू अपने गुरुओं को बट्टा लगाता है। तुझे गुरु दयाल नहीं मिला है। सिकन्दर चला गया। वह कह गया कि मेरे हाथ खोल कर जनाजे से बाहर निकाल देना। जिसे हम अर्थी कहते हैं उसे वे जनाजा कहते हैं। उसके हाथ बाहर निकाल दिए जब उसको लेकर गए तो लोगों ने कहा–वाह !

सिकन्दर सारी दुनिया के वाली थे।
पर आखरी वक्त दोनों हाथ खाली थे।।

वह दोनों हाथ खाली करके चला गया। क्या ले गया? ऐ सत्संगियो, प्रेमियों ! मैं वे बातें आप लोगों को बताता हूं। सतगुरु हुए दयाल, जिनको सतगुरु मिल जाता है तो काल का कर्जा चूक जाता है। जिनको सतगुरु मिल जाता है उनके सारे भय दूर हो जाते हैं। सतगुरु मिल जाता है तो काल भी अपना रास्ता छोड़ जाता है। वह भी कहता है कि मेरी पेश नहीं चल सकती है आप प्रश्न कर सकते हो आप काल किस को कहते हो? काल उसको कहते हैं जो तीन लोक की चीजों में जीवों को भरमाता है। यह बना लूं और वह बना लूं। इन चीजों में फंसा लिया। वह परमात्मा से नाता तुड़वा कर छोटी–छोटी चीजों में फंसा लेता है। शिखर से उतार कर नीचे डाल देता है और वह विकारों में फंस कर अपना जीवन बर्बाद कर लेता है।

सो मैंने कई ऐसे आदमी देखे हैं कि उनको माया छल लेती

है। जैसे विश्वामित्र छले गए थे। श्रंगी ऋषि छले गए थे। बड़े–बड़े मारे गए। नारद जैसे भी मारे गए। नारद को स्त्री बना दिया गया। चालीस बच्चे पैदा किये। पुराणों की बातें सुनी हुई बताता हूं। सो वह माया छल लेती है। पर किसको छलती है? जिनको सतगुरु दयाल नहीं मिले उन्हीं को छल लेती है। दयाल जब मिलते हैं तो वे पहले ही निशाना ऊंचें का बांध देते हैं। वे कहते हैं कि उस नाम का जाप कर जिसके लिए राजे–महाराजे राणे भी टक्कर मारते रह गए।

बड़े–बड़े सिर मारते रह गए। वे सारे तेरे पास आ जाएंगे। इसे कहते हैं कि भय माने भोपाल। राजे महाराजे उससे भय मानते हैं। कपिल मुनि के पास तो सगर के साठ हजार लड़के गए थे। उनको घमण्ड था। कपिल मुनि ने उनको एक ही वचन से स्वाह कर दिया। सो राजे महाराजाओं का घमण्ड टूट गया। वे कहां गए? और भी किस–किस की बातें बताऊं? लंबी मिसालें क्यों बढ़ाऊं? आगे कहते हैं–

रहट चलत युग चार बीत गए, कभी न लागी झाल।

सतयुग सतरह लाख और कुछ हजार वर्ष का था। त्रेता युग बारह लाख कुछ हजार वर्ष का था। द्वापर आया, आठ लाख कुछ हजार वर्ष का। कलयुग आया, 4 लाख कुछ हजार वर्ष का। इस तरह से सुनी थी। ये कुल 43–44 लाख वर्ष हो जाते हैं। चारों युगों की एक चौकड़ी होती है। 72 चौकड़ी का एक मनु होता है। 14 मनु का एक कल्प होता है। एक कल्प का ब्रह्मा का एक दिन होता है। ब्रह्म के एक दिन में इन्द्र के चौदह जन्म होते हैं। तुम्हारे शास्त्रों के प्रमाण दे–दे कर बताए हैं। अब बताओ, क्या कहोगे?

रहट चलत युग चार बीत गए, कभी न लागी झाल।

अर्थात् सभी युग बीत गए। सतयुग में आत्मा पर आवरण चढ़ा हुआ था। आवरण को दूर करने के लिए एक सत ही सत

था। उस जमाने में तप भी बताते हैं। ऐसा कहते हैं। फिर त्रेता युग आया। त्रेता युग में आत्मा पर विक्षेप चढ़ा हुआ था। उसको दूर करने के लिए होम यज्ञ थे। रामचन्द्र ने यज्ञ करवाई थी विक्षेप को दूर करने के लिए। फिर द्वापर युग आया। द्वापर में आत्मा पर मल चढ़ गया। सो मल को दूर करने के लिए पूजा–पाठ रह गए। अब कलयुग आ गया है। इस युग में आत्मा पर तीनों ही चीजें चढ़ी हुई हैं। मल, विक्षेप आवरण के पर्दे पड़े हुए हैं। इनको दूर करने के लिए सतगुरु दयाल हैं। अगर सतगुरु मिल जाता है तो वह तीनों पर्दों को उतार देता है। ये तीनों पर्दे किस से उतारे जाते हैं?

कलयुग केवल नाम आधारा। सुमर-सुमर नर हो गए पारा।।
कलयुग कर्म धर्म न कोई। नाम बिना उद्धार न होई।।

नाम भी कौन सा हो? वह धुनात्मक नाम है। अब नाम के बगैर उद्धार नहीं हो सकता है। सो रहट चलते–चलते चार युग बीत गए कभी न लागी झाल। झाल किसे कहते हैं? झाल तो पूर्ण सतगुरु से नाम मिल जाने को ही कहते हैं। जिसे पूर्ण सतगुरु से नाम मिल गया है फिर हम कभी भी रहट की तरह से चक्कर नहीं काटेंगे। रहट चलते–चलते कभी सूसे, कभी मूसे, कभी गीदड़ और लोमड़ी और कभी भेड़–बकरी बनते–बनते चार युग बीत गए। पर झाल नहीं लगी। झाल तो समुद्र में समाने को ही कहते हैं। हमारा जन्म–मरण से पीछा छुट जाए। हम इन भैड़े कर्मों से बच जाएं। इसीलिए कि पूर्ण सतगुरु मिला कोई। जब पूर्ण सतगुरु मिला तो उसने बता दिया कि नाम का सुमरन करो।

कहां तक करूं मैं नाम बड़ाई।
राम न सके नाम गुण गाई।।
राम ने एक तापस तिरिया तारी।
नाम ने कोटि खल कुमति सुधारी।।

मोरे मन प्रभु ऐते विश्वासा।
राम से अधिक राम के दासा।।

इस तरह की बातें कई आ जाती हैं। सो परमात्मा की भक्ति करने वाला परमात्मा का रूप बन जाता है। जो कोई कुछ काम करता है, वह उस काम का ही रूप बन जाता है। जो सूड़ काटने (झाड़ियां काटने) जाएगा, उसका झाड़ियों का ही रूप बन जाएगा। कसाई का काम करने से वही रूप बन जाएगा। जैसा जानवर आएगा वैसा ही रूप धारण कर लेगा। लोहे का काम करता होगा वह भी लोहे जैसा काला हो जाएगा। सुनार कितना ही काला हो सोने का काम करने के कारण भूरा दिखाई देगा। सो परमात्मा की भक्ति में तो बड़ा भारी आनन्द है। शब्द की कमाई करने वाला शब्द का ही रूप बन जाएगा। शब्द का रूप बन कर अपना काम कर जाएगा। सो परमात्मा की भक्ति करना सब से बड़ी चीज है। सबसे पहला काम है। यह उन्हीं का काम है जो आस्तिक हैं। नास्तिक का नहीं है। यह तो इनसान का काम है। यह तो भागी आदमियों का काम है। परमात्मा की भक्ति कोई भागी ही करता है। पर घर और बच्चे छोड़ने से नहीं होती है।

घर में रहो और कमा कर खाओ।
पर धन, पर तिरिया से नेह न लगाओ।।

ये महाराज सालिगराम की बातें हैं। मैंने आपको यही बताया है कि जब सतगुरु दयाल मिल जाता है तो काम बन जाता है। वह दयाल तुम्हारे अंदर बैठा हुआ है। अगर मेरे से प्यार करोगे, इसी प्यार में डूबे रहे तो सतगुरु के पास नहीं पहुंचोगे। मेरे से देहधारी से प्यार करो पर जो देहधारी कहता है, वह काम करो। उस देहधारी की दो बातों को मान लो तिर जाओगे।

दर्शन की प्यास और गुरु वचन पर विश्वास।

यह मैं अपना एक नया तजुर्बा बताता हूं। अभ्यास करो, अपने

घर पहुंच जाओगे। अगर दर्शन की प्यास नहीं और वचन पर विश्वास नहीं, वह कभी भी नहीं तिर सकता है। वह गिर जाएगा। अपने विचारों को पवित्र ऊंचे रखा करो। जब तुम मेरे पास आते हो तो काफी आदमियों को मिलने की कोशिश नहीं करता क्योंकि यहां का टाइम ही ऐसा है। मेरे से मिलने वाले सत्संग की या और बात पूछो, दिनोद आओ। खुला दरवाजा रखता हूं मैं। टाइम पर आओ। मैं ध्यान में बैठ जाता हूं तब बंद करता हूं नहीं तो मैं बैठा रहता हूं। कोई भी आओ। मैं आप लोगों की खातिर आया हूं। मैं सेवादार हूं। मैं न महात्मा हूं, न गुरु, न पीर हूं। मुझे तो गुरु महाराज ने आप की सेवा करने के लिए भेजा है। सतगुरु तो मेरा सतगुरु ही था। मैं उन्हीं की दया से बातें करता हूं। मैं न लिखना जानता हूं न पढ़ना। मैं तो एक नाम को ही जानता हूं। अब नाम से उद्धार कल्याण होगा वह तुम्हारे अंदर है। पर नाम कौन सा है–

नाम-नाम सब कहें, नाम न चिन्हा कोय।
नाम गुरु की दात है, नाम कहा वै सोय।।

नाम तो उनकी दात है। मीराबाई ने गिरधर जप लिया। ईसा–मसीह ने पिता–पिता जप लिया। रामकष्ण परमहंस ने माता–माता जपी है। कोई कुछ जपता है कोई कुछ। अपनी मर्जी से जपते हैं। पर जब छठे चक्कर पर सुरत पहुंचेगी तब पता लग जाएगा कि नाम कौन सा है। वह नाम जिसकी छठे चक्कर पर धुनकारें उठती हैं वह बदली नहीं हो सकता है। अठारह मंजिलें और नाम की धुनि बदली नहीं हो सकती हैं। वे न घट सकती हैं न बढ़ सकती हैं। पर सतगुरु बताने वाला चाहिए। तब पता लगता है। सो एक शब्द बताता हूं–

नमों-नमों सतपुरुष को नमस्कार गुरु कीन्ह।
सुर नर मुनि जन साधुवा संता सर्वस दीन्ह।।

गुरु की महिमा क्या कहूं साख भरैं सैं वेद।
बिन सतगुरु नहीं पाइए अगम पंथ का भेद।

शब्द-

ओ अनघड़िया देवा थारी कौन करेगा सेवा।
घड़े देव को सब कोई पूजैं, निश दिन करते सेवा।
पूर्ण पुरुष अखण्डी स्वामी ताका जाने ना भेवा।।
दस अवतार निरंजन कहिए से अपना ना होई।
ये तो अपनी करणी भोगैं करता और ही कोई।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर कहिए इन सिर लागी काई।
इनके भरोसे कोए मत रहियो इनहू न मुक्ति पाई।।
जोगी जपी तपी सन्यासी आप-आप ने लड़िया।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, शब्द लखा सोए तिरिया।।

ये कबीर साहब की वाणी है। इस सारे शब्द को मैं नहीं खोलता। पर इसकी बातें आप लोगों को बताता हूं। मेरे ऊपर धब्बा न आवे कि मैं निंदा करता हूं। तुम्हारी आत्म पुराण की सारी कहानी है। ब्रह्मा, विष्णु, शिवजी की और इन्द्र की। उनको कोई समझने वाला है तो समझ जाएगा। पर यह मत सोचो कि ये गिर गए। ये चक्कर में जरूर ही पड़ गए। जितने लुट गए सो लुट गए और जितने बचे सो बच भी गए। सब ही अपना–अपना कर्म भोगने के लिए आते हैं। पर यह इंसान का चोला बड़ा कीमती मिला हुआ है। अगर इसमें भी चूक गए तो चूक ही गए। क्योंकि रामायण के लिखने वाले तुलसीदास जी कहते हैं–

अब के चूके नहीं ठिकाणा।
दिन पर दिन चोला होए पुराणा।।
तू करले बंदे भजन हरि का।
फिर के बनेगा इस खोड़ मरी का।।

आगे कितनी पवित्र बातें कहते हैं–

बड़े भाग मानुस तन पावा।
सुर दुर्लभ शुद्ध ग्रंथन गावा।।

अर्थात् इस मानस चोले को देवी–देवता भी तरसते हैं और आपको वह कीमती टाइम मिला हुआ है। फिर हम इसको भांग के भाड़े खो देते हैं। पशुओं की तरह बर्बाद करते रहते हैं। क्यों खोते हैं? सतगुरु नहीं मिला। सतगुरु मिल जाता तो बच जाते। पर सतगुरु यह नहीं कहता कि अपने बच्चे छोड़ कर भागो। अपना घर छोड़ दो। बल्कि मैं तो कहता हूं कि तुम्हारा सबसे बड़ा तीर्थ है कि गरीबों की मदद करना सीखो यही तीर्थ है। और भी बड़ी बात बताता हूं। अपने मां–बाप, बुजुर्गों की सेवा करो। जो अपने मां–बाप की सेवा करता है वह कभी धोखा नहीं खाएगा। कभी गिरेगा नहीं। उनका आशीर्वाद इतना होता है। गरीबों की मदद करने वाले की ध्वजा कभी भी धसकेगी नहीं। अगर ऊंचे चढ़ना चाहते हो तो गरीबों की मदद करना सीखो। उनकी सेवा करनी सीखो। पर कब सीखोगे? अपने घरों में बुजुर्गों की सेवा सीखो फिर उनकी सेवा भी कर दोगे। पर हम तो उन बुजुर्गों को भी धक्के मारते हैं और गरीबों को भी धक्के मारते हैं। परमात्मा की तलाश करना चाहते हैं। कहां? मंदिरों और तीर्थों में। परमात्मा तीर्थों मंदिरों में नहीं है। परमात्मा तो परमात्मा के बनाए हुए मंदिरों में है। मंदिर तो जितने भी हैं, ये तो तुम्हारे ही बनाए हुए हैं। पर इनमें भी जाया करो और बैठा करो। इनमें भी जो तुम दोगे तो परमात्मा तुम्हें कुछ न कुछ वापिस दे देगा। पर मां–बाप की सेवा पहले करनी चाहिए। ये सबसे बड़े मंदिर हैं। ये सब से बड़े तीर्थ हैं। इनकी सेवा करता है वह धोखा नहीं खा सकता है। कभी भी दुखी नहीं होगा।

।। राधास्वामी ।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जनवरी/फरवरी 2006 मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	पुट्ठी सामाण	23 जनवरी -	29 जनवरी
2.	मोठ	30 जनवरी -	05 फरवरी
3.	अण्टा	06 फरवरी -	12 फरवरी
4.	बरवाला	13 फरवरी -	19 फरवरी

विशेष सूचना

'राधास्वामी सन्त सन्देश' पत्रिका की वार्षिक सदस्यता 31.12.2005 को समाप्त हो रही है अगले वर्ष 2006 का वार्षिक शुल्क 40/–रूपये, 5 वर्षीय शुल्क 200/–रूपये एवं आजीवन शुल्क 500 रुपये है, नकद, मनीआर्डर एवं बैंक ड्रापट द्वारा सचिव, राधास्वामी सत्संग भवन (दिनोद), रोहतक रोड़, भिवानी –127021 को अपना शुल्क जल्द से जल्द भेजकर रसीद प्राप्त कर लें।

कृपया अपना पता पूरा और स्पष्ट लिखें जिससे पत्रिका ठीक समय पर मिल सके।

स्त्री

महर्षि शिवव्रत लाल जी

बल, स्त्री व सुन्दरता यह तीनों भाग्य से प्राप्त होते हैं। यदि किसी की स्त्री अच्छी है तो समझ लो वह दीन व दुनिया में राजा है। यदि किसी की स्त्री अच्छी नहीं है तो उसका यह संसार जीते-जी नरक बन जाता है।

जो लोग यह कहते हैं कि स्त्री बन्धन की कारण है वे शायद गलती पर हैं। उन्होंने स्त्री के रूप को नहीं समझा और न उनको अपने ही रूप का ज्ञान हुआ। स्त्री न अच्छी है न बुरी है। मनुष्य जैसा अपना भाग्य बना ले वैसे ही उसको स्त्री मिलती है। मनुष्य आप अपने भाग्य को बनाने वाला और बिगाड़ने वाला है। जैसा शरीर होगा वैसे ही उसकी छाया होगी। स्त्री वास्तव में पुरुष की छाया है। इससे अधिक उसकी स्थिति नहीं है। स्त्री अन्न देती है वह अन्नदाता है, स्त्री बल देती है वह बलदाता है। स्त्री बुद्धि देती है वह बुद्धिदाता है। सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी ये स्त्री के रूप हैं। वह भोग व मोक्ष दोनों की दाता है यह पुरुष की प्रबल शक्ति है। यदि यह न हो तो जीना अकार्थ है। जिसके स्त्री नहीं वह जीते जी मृतक है। उसका संसार में आना निष्फल है। न किसी ने उसके आने को जाना और जब वह चला जायेगा न कोई उसको जानेगा और न उसके नाम पर आंसू बहायेगा। लोक परलोक का व्यवहार स्त्री की देह से होता है। भलाई-बुराई सबकी जड़ स्त्री है। यह न हो तो कुछ भी नहीं। क्यों कोई व्यवहार करें? क्यों किसी प्रकार के काम का ध्यान आवे।

नारी निन्दा न करो, नारी नर की खान।
नारी से नर होत है, ध्रुव प्रहलाद समान।।

अनमोल वचन

अपने मतलब के लिये किसी को मन, वचन और कर्म करके न सतावे और न दुख पहुंचावे। किसी से विरोध और ईर्षा न करे, और अपने को अन्तर में हमेशा दीन रखे।

-स्वामी जी महाराज

हजार बरस जो बीत गये और हजार बरस जो आने वाले हैं, इन सबसे बढ़कर वह समय है जो तुम्हारे हाथ में है।

-मौलाना शिवली

बड़े लोगों का साथ मिलने पर छोटे लोगों को नहीं छोड़ देना चाहिये, जहां सुई का काम होता है, वहां तलवार कुछ नहीं कर सकती। *-संत कबीर साहिब*

संसार में खप जाना आसान है, किन्तु संसार से पथक होना कठिन है। दुनिया एक पागलखाना है और लोग दीवानों के मानिन्द है। *-मौलाना रूम*

ज्ञान-सार

जितना समय हम किसी कार्य की चिन्ता में लगाते हैं यदि उतना ही समय हम उस कार्य में लगायें तो चिन्ता जैसी कोई चीज ही नहीं रह जाये।

कोई भी व्यक्ति जब तक कि वह प्रसन्नता से मरने को तैयार नहीं रहता, जीवन का सच्चा आनन्द नहीं ले सकता।

जैसे बादल पृथ्वी से जल लेकर फिर पृथ्वी पर बरसा देते हैं वैसे ही सज्जन भी जिस वस्तु का ग्रहण करते हैं उसका दान भी करते हैं।

जो दान अपनी कीर्ति-गाथा गाने को उतावला हो उठता है, वह दान नहीं, अपितु अहंकार एवं आड़म्बर मात्र रह जाता है।

सत्संग भावांश ढांणी सांकरी 24.12.2005

संसारी विषय-विकारों के नाग ने इस जीव को बुरी तरह से डस रखा है। इसी कारण इस का यह विष इसके शरीर की नस-2 में बुरी तरह फैल गया है और यह इस विष से ग्रसित होकर लख चौरासी में बदहाल सिर पटकता फिर रहा है। यदि यह पूर्ण सन्त सतगुरु की खोज करके, उसकी दया मेहर प्राप्त कर ले, तो विषय-विकारों के इस जहर को उनसे उतरवा करके यह अपने आदि अमर निज धाम में पहुंच सकता है, अन्यथा इस की इस दुरावस्था से बचने का अन्य कोई भी उपाय नहीं है। अत: इसके लिये उसका सिर भी जाय तो भी यह लाभ का सौदा है। उक्त विचार राधास्वामी सन्त सतगुरु परम सन्त हुजूर कंवर साहब महाराज ने निम्नलिखित दोहे पर सत्संग बख्शते हुए व्यक्त किए-

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

हुजूर महाराज जी ने फर्माया कि मानव चोले को नर नारायणी देह कहा जाता है। इस चोले के लिए देवी-देवता भी तरसते हैं, क्योंकि केवल मात्र इसी चोले में सन्त सतगुरु की दया मेहर से यह जीव लख चौरासी के दुखों से पीछा छुटवा सकता है। इस चोले को प्राप्त करके भी यदि इन्सान सन्त सतगुरु की दया-मेहर प्राप्त नहीं करता है, तो उसका वह चोला पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों से भी बदतर या पतित है क्योंकि पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों के विषय-भोगों की तो कुछ मर्यादाएं भी हैं, जब कि मनुष्य में किसी भी मर्यादा के न होने के कारण, उसका यह तन विष की बेल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इसीलिए तो किसी ने यह बात कही है कि-

बन्दा खुदा की बन्दगी करे तो बन्दा है।
नहीं तो, ये गन्दे से भी गन्दा है।।

सन्त सतगुरु जीव को निजनाम देकर सुरत-शब्द का अभ्यास करने की शिक्षा देते हैं। सुरत-शब्द का अभ्यास ही एक ऐसा अभ्यास है जो उसके

विषय-विकारों के विष को दूर करके जीव को पवित्र कर सकता है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि आज जगह-2 पर लोग सन्त सतगुरु बनकर बैठ गए हैं और वे अपने नाम के आगे सन्त भी लगाते हैं, क्योंकि सन्त की कोई उपाधि तो होती ही नहीं है कि जिससे किसी को सन्त लगाने से रोका जा सके। उधर लोग भी अपने उस गुरु से नाम लेकर ना ही तो यह देखने का कष्ट करते हैं कि उनके शरीर से विषय-विकारों का यह विष उतर रहा है और वे पवित्र हो रहे हैं या नहीं और ना ही वे यह देखते हैं कि उनका वह तथाकथित गुरु तो भिखारी बन कर घर-घर भीख मांगता फिर रहा है और उस में असंख्य अन्य अन्य दोष भी भरे हैं। यह सोचते हुए भी कि वह गुरु उनकी कुछ भी भलाई नहीं कर सकता है, तो भी वे समाज की शर्म के कारण उसी के साथ बन्ध कर बैठ जाते हैं और अपना अकाज कर लेते हैं, जबकि सभी सन्तों ने यह बात स्पष्ट कही है कि जीव को अपने गुरु में कमी दिखाई दे जाए, तो उसको तुरन्त ही छोड़ देना चाहिए। अन्यथा उनकी हानि हो जाएगी। इस सम्बन्ध में स्वयं स्वामी जी महाराज के वचन हैं कि-

सुरत-शब्द बिन जो गुरु होई, तां को छोड़ो पाप कटा।

सुरत-शब्द के मार्ग जैसा संसार में अन्य कोई भी मार्ग नहीं है। सुरत-शब्द का अभ्यास जीव की आत्मा पर चढ़े मल, विक्षेप व आवरण के पर्दे अथवा उसके शरीर की नस-2 के विषय-विकारों के इस विष को पूरी तरह से उतार कर उसे पवित्र कर देता है, जिससे वह इसी जन्म में उस अद्भुत आदि अमर निज घर में पहुंच जाता है, जिसका कोई भी वर्णन नहीं हो सकता है। उस आदि घर के बारे में स्वामी जी महाराज ने केवल मात्र इतना ही कहा है कि-

नहीं ख्यालिक, मख्लूक, न ख्यिलकत।
कर्त्ता, कारण, काज, न दिक्कत।।
राम, रहीम, करीम, न केशो।
कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं, था सो।।

कुल मालिक के उस धाम में इस सृष्टि जैसे कार्य क्लाप, हलचल, रोना-पीटना, देवी-देव और अवतार नहीं हैं। वहां तो आश्चर्यजनक सुख ही सुख है और वह मालिक उस अदभुत व हैरतअंगेज सुख का ही रूप है। उस मलिक के बारे में स्वामी जी आगे यही बताते हैं-

हैरत, हैरत, हैरत होई। हैरत रूप धरा तुम सोई।।

■

परम सन्त पूर्ण धनी हुजूर महाराज जी राधास्वामी !

मैं विजय कुमार कौशिक, तह. कोसली, जिला रेवाड़ी सतगुरु दया मेहर का वर्णन करता हूं जो इस प्रकार है–मेरे तीन लड़किया थी। तीनों के समय मैंने अपनी धर्म पत्नी को कहीं–कहीं से लड़के होने की दवाई दिलवाई लेकिन कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई। फिर चौथी बार हम किसी के बताए अनुसार सोरखी गांव में पहुंचे वहां कोई वैद्य जी लड़के होने की दवा देते थे। वैद्य जी ने कहा कि अब तक कहां सो रहे थे मेरे पास तो छोरो (लड़कों) के बोरे भरे पड़े हैं। हमने विश्वास करके वैद्य के बताए अनुसार दवाई सही तरीके ली। हुआ यह कि मरी हुई लड़की पैदा हुई। इस तरह हम कई–कई जगह जाकर बिल्कुल भटक चूके थे। ऐसे समय में हमारी मुलाकात एक सत्संगी से हुई जिसने कि हुजूर महाराज जी ने नामदान लिया हुआ था। उन्होंने बताया कि आप भी हजूर महाराज जी से नामदान लेकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करो। मैंने और मेरी धर्मपत्नी ने मार्च, 2003 में परम सन्त कंवर जी महाराज से नामदान की बख्शीश ली। उसके बाद हम 27.9.2004 को दिनोद धाम में पहुंचे। मैंने गुरु महाराज जी से विनती की हुजूर मेरे चार लड़किया हैं लेकिन लड़का नहीं है। तब महाराज जी ने मेरी धर्मपत्नी को प्रसाद दिया तथा उसे लेने की विधि बता दी। सही समय 18.5.2005 को मेरी धर्मपत्नी ने बेटे को जन्म दिया। हमे अपने गुरु महाराज पर पूरा विश्वास है। हमारा सारा परिवार 4.7.2005 को दिनोद धाम में महाराज जी को शत–शत धन्यवाद करने लगा तथा सारे परिवार ने महाराज जी के दर्शन कर उनसे

शुभ आशीर्वाद लिया। हम इस उपकार के लिए महाराज जी के सदा आभारी रहेंगे। सतगुरु महिमा को तो जानने वाले ही जानते हैं। रामायन में लिखा हुआ है कि अगर ब्रह्मा क्रोध करे तो गुरु बचा सकता है।

मगर गुरु ब्रह्मा: गुरु विष्णु: देवो महेश्वर:

।। राधास्वामी ।।

–विजय कुमार कौशिक
पुत्र श्री राम निवास कौशिक,
गांव नया गांव (जाट), तह. कोसली
जिला रेवाड़ी (हरियाणा)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

जीवन दर्शन

सच्चे मालिक से और संत सतगुरु से उनके चरणों में सच्ची प्रीति और प्रतीत को जब–तब मांगना चाहिये, पर जल्दी और हठ नहीं करनी चाहिए, क्योंकि चाह के पूरा न होने से मन अभाव लायेगा और बे–प्रतीत हो जायेगा।

–स्वामी जी महाराज

कर्म का फल (कहानी)

वेद, शास्त्र, ईश्वर और महापुरुषों के वचनों में तथा परलोक में जो प्रत्यक्ष की भांति विश्वास है एवं उन सबमें परम पूज्यता और उत्तमता की भावना है-उसका नाम श्रद्धा है।

जब तक इन्द्रियां और मन अपने काबू में न आ जायें तब तक श्रद्धापूर्वक कटिबद्ध होकर तीव्र अभ्यास करते रहना चाहिये। जितना ही श्रद्धापूर्वक तीव्र अभ्यास किया जाता है, उतना ही इन्द्रियों का संयम होता जाता है। अतएव इन्द्रिय-संयमकी जितनी कमी है, उतनी ही साधन में कमी समझनी चाहिये और साधन में जितनी कमी है, उतनी ही श्रद्धा में त्रुटि समझनी चाहिये।

वेद, शास्त्र और महापुरुषों के वचनों को तथा उनके बतलाये हुये साधनों को ठीक-ठाक न समझ सकने के कारण, उस पर भी विश्वास न होने के कारण जिसको हरेक विषय में संशय होता रहता है, जो किसी प्रकार भी अपने कर्तव्य का निश्चय नहीं कर पाता वह मनुष्य अपने मनुष्य जीवन को व्यर्थ ही खो बैठता है।

जिस संशययुक्त पुरुष में न विवेक शक्ति है और न श्रद्धा है उसका अवश्य पतन हो जाता है।

संशययुक्त मनुष्य केवल परमार्थ से भ्रष्ट हो जाता है, इतनी ही बात नहीं है, जब तक मनुष्य में संशय विद्यमान रहता है, वह उसका नाश नहीं कर लेता, तब तक न तो इस लोक में यानि मनुष्य शरीर में रहते हुये धन, ऐश्वर्य या यम की प्राप्ति कर सकता है और न ही किसी प्रकार के सांसारिक सुखों को ही भोग सकता है।

ईश्वर है या नहीं, है तो कैसा है, परलोक है या नहीं, यदि है तो कैसे है और कहां है, शरीर, इन्द्रियां, मन और बुद्धि-ये सब

आत्मा हैं या आत्मा से भिन्न हैं, जड़ हैं, या चेतन, व्यापक हैं या एक देशीय, जीवात्मा हैं या आत्मा से भिन्न हैं, आत्मा एक है या अनेक, कर्मबन्धन से छुटने के लिये कर्मों को स्वरूप से छोड़ देना ठीक है या कर्मयोग के अनुसार उनका करना ठीक है। अथवा सांख्ययोग के अनुसार साधन करना ठीक हैं-इत्यादि जो अनेक प्रकार की शंकाएं तर्कशील मनुष्यों के अन्त:करण में उठा करती हैं ये समस्त शंकाएं निश्चय कर लेना, किसी भी विषय में संशय युक्त न रहना अपने कर्तव्य को निर्धारित कर लेना, यही विवेक ज्ञान द्वारा समस्त संशयों का नाश कर देना है।

जिसके मन और इन्द्रियां वश में किये हुए हैं, अपने काबू में हैं, उस पुरुष के शास्त्र विहित कर्म ममता आसक्ति और कामना से सर्वथा रहित होते हैं, इस कारण कर्मों में बन्धन करने की शक्ति नहीं रहती। ■

जीवन-दर्शन

आपके घर में सब कुछ है। आप दो मुट्ठी अनाज जानवरों को भी डाला करो। भूखे आदमियों को रोटी खिलाया करो। गरीबों की मदद किया करो। मालिक को यदि तलाश करना चाहते हो, तो उसको गरीबों में ढूंढो। मालिक तुम्हारी मदद करेगा।

-परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज

तामसिक भोजन से तामसिक वृत्ति का फैलाव
(परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी के सत्संग प्रवचन से)

एक बार आश्रम में सेवादारों की परस्पर अनबन होने लगी। बात-2 पर सेवादार गुस्सा करते मिलते। महाराज जी ने बताया-मैंने विचार किया कि आखिर ये सेवादार इतने भड़कते क्यों हैं? आने वाली सेवा पर ध्यान किया। नजर में नहीं आया कि किसी बुरे आदमी की सेवा आश्रम में प्रयोग की गई हो या कोई व्यर्थ की वस्तु उपयोग में लाई गई हो। चारों तरफ मन दौड़ाकर देख लिया लेकिन ऐसी कोई चीज मालूम नहीं पड़ी, जिसके लिये कहा जा सके कि उसने आश्रम का शान्त वातावरण बिगाड़ा हो। अचानक हुजूर का ध्यान आश्रम की भैंस की और गया। आश्रम में उन दिनों एक भैंस रखी थी। जिसके दूध से संगत की चाय का काम चल जाता था। हुजूर के ध्यान में यही बात खटकी कि भैंस का दूध प्रयोग करने से भैंस जैसी बुद्धि हो जाती है।

जैसी पीए दूधि, वैसी हो जा बुद्धि।

इस विचार के कौंधते ही हुजूर महाराज जी ने तुरन्त वह भैंस बेच दी। उस दिन के बाद से वही शान्त वातावरण बन गया। इसके बाद हुजूर महाराज ने गायें रखनी शुरु कर दी, जो अब भी अपने दूध से आश्रम वासियों को भजन-सुमरन में चेतन रखती हैं।

जो अपने शरीर को पहचानता है, वह खाने-पीने का होश रखता है। वह बड़ी शान्ति से खाता है। तुमने देखा होगा कि जानवर भी बीमार हो जाते हैं तो वे एकान्त चाहते हैं। वे एकान्त में चले जाते हैं। हम आदमी होकर भी एकान्त नहीं चाहते।

राधास्वामी सत्संग (दिनोद)
सत्संग सूची वर्ष 2006

2 फरवरी	गुरुवार	(बसन्त पंचमी)	अण्टा
12 फरवरी	रविवार		सिवानी
5 मार्च	रविवार	(वार्षिक)	भिवानी
13 अप्रैल	गुरुवार	(बैसाखी)	हाँसी
11 जुलाई	मंगलवार	(गुरु पूर्णिमा)	भिवानी
9 अगस्त	बुधवार	(रक्षा बंधन)	दादरी
22 सितम्बर	शुक्रवार	(जन्म दिन बड़े महाराज जी)	दिनोद
1 अक्तूबर	रविवार	नजफगढ	(दिल्ली)
24 अक्तूबर	मंगलवार	(भैया दूज)	सोनीपत
5 नवम्बर	रविवार (वार्षिक)		भिवानी

अद्धरेदात्मनाऽऽडत्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यामनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।

स्त्री, पुत्र, धन, मान और बड़ाई आदि इस लोक के और स्वर्ग सुखादि परलोक के जितने भी भोग हैं, उन सभी का समावेश कर्मफल में कर लेना चाहिये। साधारण मनुष्य जो कुछ भी कर्म करता है, किसी न किसी फल का आश्रय लेकर ही करता है। इसीलिये उसके कर्म उसे बार-2 जन्म-मरण के चक्कर में गिराने वाले होते हैं। अतएव इस लोक और परलोक के सम्पूर्ण भोगों को अनित्य, क्षणभंगुर और दुखों में हेतु समझकर समस्त कर्मों में ममता, आसक्ति और फलेच्छा का स्वर्था त्याग कर देना ही कर्मफल के आश्रय का त्याग करना है।

जिसने अग्नि को त्यागकर सन्यास-आश्रम का तो ग्रहण कर लिया है, परन्तु जो ज्ञान योग (सांख्य योग) के लक्षणों से युक्त नहीं है, वह वस्तुतः सन्यासी नहीं है, क्योंकि उसने केवल अग्नि का ही त्याग किया है, समस्त क्रियाओं में कर्त्तापन के अभिमान का त्याग तथा ममता आसक्ति और देहाभिमान त्याग नहीं किया।

जो सब क्रियाओं का त्याग करके ध्यान लगाकर तो बैठ गया है, परन्तु जिसके अन्तःकरण में अहंता, ममता, राग, द्वेष, कामना आदि दोष वर्तमान हैं, वह भी वास्तव में योगी नहीं हैं, क्योंकि उसने भी केवल बाहरी क्रियाओं का ही त्याग किया है, ममता, अभिमान, आसक्ति, कामना और क्रोध आदि का त्याग नहीं किया।

मानव-जीवन के दुर्लभ अवसर को व्यर्थ न खोकर कर्मयोग, सांख्ययोग तथा भक्तियोग आदि किसी भी साधन में लगाकर अपने जन्म को सफल बना लेना ही अपने द्वारा अपना उद्धार करना है।

राग द्वेष, काम-क्रोध और लोभ मोह आदि दोषों में फंसकर भांति-भांति के दुष्कर्म करना और उनके फलस्वरूप मनुष्य शरीर

परमफल भगवत प्राप्ति से वंचित रहकर पुनः शूकर-कूकरादि योनियों में जाने रूपी का कारण बनना अपने को अधोगति में ले जाना है।

मनुष्य को कभी भी यह नहीं समझना चाहिये कि प्रारब्ध बुरा है, इसलिये मेरी उन्नति होगी ही नहीं। उसका उत्थान-पतन प्रारब्ध के अधीन नहीं है, उसी के हाथ में है। मनुष्य अपने स्वभाव और कर्मों में जितना ही अधिक सुधार कर लेता है, वह उतना ही उन्नत होता है। स्वभाव और कर्म सुधार ही उन्नति या उत्थान है तथा इसके विपरीत स्वभाव और कर्मों में दोषों का बढ़ना ही अवनति या पतन है।

जो अपने उद्धार के लिये चेष्टा करता है, वह आप ही अपना मित्र है और जो इसके विपरीत करता है, वही अपना शत्रु है। इसलिये अपने से भिन्न दूसरा कोई भी अपना मित्र या शत्रु नहीं है।

महा भारत